Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No. 8917
Book No. B39BR
Receiving No. 3947

बेढब की बहक

लेखक
'बेढब' बनारसी

प्राप्ति स्थान
बिहार ग्रंथ कुटीर
पटना—३

तृतीय संस्करण] १९५६ [मूल्य दो रुपया
सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित

प्रमुख विक्रेता
बम्बई बुक डिपो
१६५/१ हरिसन रोड,
कलकत्ता ७

कल्याणदास एंड ब्रदर्स, बड़े महाराज का मंदिर, बनारस—१ द्वारा प्रकाशित तथा प्रियानाथ पाण्डेय, सन्मार्ग प्रेस, टाउनहाल, फोन नं० ५२० बनारस में मुद्रित।

तीसरा संस्करण

मुझे प्रसन्नता है कि बहक का तीसरा संस्करण पाठकों के सामने प्रस्तुत हो रहा है। इससे इतना पता चलता है कि लोगों का इससे मनोरंजन होरहा है। जब लेखक अपने ध्येयकी पूर्ति देखता है तब उसे अपार आनंद होता है। मुझे भी सुखका अनुभव होरहा है, यह पंक्तियाँ लिखते।

मैं मेसर्स कल्याणदास एंड ब्रदर्सका आभारी हूँ कि उन्होंने तत्परता तथा रुचिसे पुस्तकके संस्करण निकाले हैं।

१९५६
रंगभरी एकादशी

बेढब बनारसी

सूचीक्रम

१	रेगुलर रहो	१
२	धोतीको पतलूनके अन्दर	२
३	दुकान गंगा रामकी	४
४	कालरसे गलेको घोंटकर	६
५	हजूरका आसरा	७
६	मुसलमाँ होंगे	६
७	रामदाना	१०
८	डिगरियोंका बंडल	११
९	सिल्ली पर उस्तरा	१२
१०	जबाँको सँभाल के	१४
११	आतंक निग्रह पिल	१६
१२	नमस्ते-बन्दगी	१७
१३	डारविनकी थियोरी	१८
१४	बेढबसे पाला	२०
१५	नमकका डिपो	२१
१६	मोटर कारकी चोट	२३
१७	पत्थरकी सिल	२५

१८ दिलका सेल	२७
१९ सीनेका दर्द	२८
२० खाली	३०
२१ आज बुद्धू भी कलक्टर हो गये	३१
२२ वैजलिन लगाते हैं	३३
२३ सरविसका डर	३५
२४ टीचरी	३६
२५ कर्म	३८
२६ बे भंगकी टंडाई	३९
२७ अजीब फूल	४०
२८ अखरोटका फ्रूट	४१
२९ ट्रंकके आगे पिटारा	४३
३० डायरके चचा	४५
३१ खुला जंपर	४७
३२ पश्चिमकी हवा	४८
३३ मंकी ग्लैंड	५०
३४. कोर्टशिप-गगनमें	५१
३५ सोया बीन	५२
३६ बेकार जहाज हवाई है	५३
३७ मलाई है	५५

३८ वाटरफाल ५६
३९ उँटोंका राष्ट्रगान ५७
४० विश्वके विषय ५८
४१ सरकार हूँ मैं ५९
४२ कैरमकी गोटी ६१
४३ बिठाये बैठे हैं ६२
४४ पतलून पहनता हूँ मैं ६३
४५ हमें आजाद मत करना ६५
४६ शैर अकबर ६६
४७ काशीमें ६७
४८ बनबिलावसे ६८
४९ कमाने लगा हूँ मैं ६९
५० हूर यहाँ है ७०
५१ सूई लगा रहा है ७१
५२ बात बनाते ७२
५३ मुहब्बतकी निशानी ७३
५४ तिकड़म ७४
५५ खैराती ७५
५६ मिनिस्टर के साथ ७६
५७ चबकपर चबक ७७

५८	नालीकी	७८
५९	सावनके महीनेमें	७९
६०	चाल बेढब	८०
६१	मरहम है	८२
६२	तन्दूरसे	८४
६३	पूस आता है	८५
६४	कुआँरमें	८६
६५	शमाके साथ परवाने	८७
६६	इज्जत बढ़ा दी	८७
६७	प्रेममें टी० बी०	८९
६८	निशानी नहीं है	९०
६९	साहित्य सेवा	९२
७०	शरबते दीदार	९३
७१	सितम	९४
७२	चौपदे	९७

रेगुलर रहो

खुदा महफूज रखे अहले-दिलको इस जमाने में,
बनायी जा रही है आशिकोंकी लिस्ट थानेमें।

अजब अंदाज बिगड़े मिस्टरोंके इस ज़मानेमें,
बचा कुछ वक्त कालेज से तो वह गुजरा जमानेमें।

'बिज्जी' हैं आज कल बीबीको हम टेनिस खेलानेमें,
लगा है ध्यान सारा लबका सेट उनको जितानेमें।

कहीं भरती न कर लें फौजमें देखो सभल जाओ,
बड़े चालाक हो नजरोंसे तुम खंजर चलानेमें।

अगर कालेजमें यह ट्रेनिंग भी दे देते तो अच्छा था,
कि क्या क्या दिक्कतें पड़ती हैं मिसके नाज उठानेमें।

अभी ठहरो मंगायी है किताबें हमने 'ओविड' की,
उन्हें कुछ याद कर लूं तब मजा आये मनानेमें।

कोई 'सेकशन' गिरफ्तारीका इनपर क्यों नहीं लगता,
यह क़ातिल बेधड़क आज़ाद फिरते हैं जमानेमें।

कहीं हमभी न जल जायें, घर अपनाभी न जलजाये,
लगा है तार बिजलीका हमारे आशियानेमें।

अगर 'बेढब' तुम्हें खाहिश है जेंटिलमैन बननेकी,
न हो कुछ और तो 'रेगुलर' रहो मूछें मुड़ानेमें।

धोती पतलूनके अंदर

असरसे अपनी आहोंके जो पैदा बिजलियाँ कर लूँ,
नयी एक रोशनी में आज मैं हिंदोस्तां कर लूँ।
तअज्जुब क्या कि पैदा दोस्तोंमें कद्रदां कर लूँ,
अगर हाथोंमें अपने एक मिस शीरीं जुबां कर लूँ।
किसी मिस फ़ैशनेबलको अगर मैं मेहमां कर लूँ,
अजब क्या है कि अपना झोपड़ा रश्के जनां कर लूँ।
अगर क़ाबूमें अपने तुझको ए पीरे मुगाँ कर लूँ,
बिना लाइसेंसके मैं घरपे एक मैकी दुकां कर लूँ।
किसी ढबसे किसी लीडरको मैं जो मिहरबाँ कर लूँ,
तो एक अच्छीसी सरविस मैं जहाँ चाहूँ वहाँ कर लूँ।
मुझे भी लोग झुक झुक कर करेंगे बंदगी एकदिन,
अगर लंदनमें जाकर पास कोइ इम्तिहाँ कर लूँ।
अगर दो चार मुसल्ले पालिसी के हाथ आ जायें,
यकीं है अपनी मुट्ठीमें अभी सारा जहाँ कर लूँ।
जो मिल जायें मुझे कमसिन मिसें और बोतलें मैकी,
ज़रूरत क्या वहाँ जानेकी लंदन मैं यहाँ कर लूँ।

बुलायेंगे डिनरमें लोग उनको और मुझकोभी,
किसी पहलूसे बीबीको अगर मैं नौजवां कर लूँ।
रटा सब वेदो कुरआँ फिरभी आखिर रह गये कोरे,
अभी मिलजाय 'प्रोफेसर-शिप' जोमिल्टन वरजवां करलूँ।
नये युगमें भी आसानी से मिल जाये मुझे सरविस,
अगर धोतीको मैं पतलूनके अंदर निहां कर लूँ।
इसी हसरतमें बुलबुलने तड़पकर जान तक दे दी,
मैं अपना आशियाँ कर लूँ मैं अपना बागवां कर लूँ।
यह सारी डिगरियाँ बेकार हो जायेंगी दम भरमें,
जो थानेदारको 'बेढब' कहीं मैं बदगुमां कर लूँ।

दूकान गंगारामकी

डिगरियाँ कालेजकी कुछ निकलीं न मेरे कामकी,
काम कुछ आयी अगर तो बंदगी हुक्कामकी।
स्वर्गसे बढ़कर बुलंदी है तुमारे बामकी,
हो नहीं सकती पहुँच बँगलेपे खासो-आमकी।
कोशिशें कितनोंने कीं पर ठाट पर सब रह गये,
टाइटिल मुझको मिली है आशिके बदनामकी।
छोड़कर सब देवता माला उन्हींकी जप रहे,
धूम है चारो तरफ इस युगमें उनके नामकी।
'सेफटी रेजर' से मिस्टर 'शेव' कर लेते हैं रोज,
अब जरूरत कुछ नहीं है हिंदमें हज्जामकी।
नींदसे दुनियाँके अब सब लोग हैं उठने लगे,
यह जफा है जानबुलपर गरदिशे अय्यामकी।
रुख हवाका फिर गया, ठंढक हुई पानी गिरा,
आँख पर बदली नहीं अबतक किसी हुक्कामकी।
अब न वह 'ब्यूटी' चमनकी है, न अब वह फूल हैं,
कुछ करोटन हैं लगे, हैं टहनियाँ कुछ पामकी।

मरनेको तैयार हैं कंजूस आशिक आपपर,
जो कहीं मिल जाय थोड़ी संखिया बेदामकी।
फिर वही चुक्कड़ वही ठर्रा वही भूने चने,
फिर वही 'बेढब' वही दूकान गंगारामकी।

कालरसे गलेको घोंटकर

वतन वाले फजूल उनसे तलब इमदाद करते हैं,
जो आधी उम्र तक यूरपकी हिस्ट्री याद करते हैं।
हम स्पीचोंमें अपनी जिंदगी बरबाद करते हैं,
जिन्हें सुन सुनके वह हम पर सितम इजाद करते हैं।
मेरी गरदनपे खंजर फेरके इरशाद करते हैं,
तुम्हींको क्या तुम्हारी रूहभी आजाद करते हैं।
समझते हैं कि लड़के हैं बहल जायेंगे बातोंमें,
वह बातोंकी मिठाईसे मेरा दिल शाद करते हैं।
"जरा सी चोट पर इतनी शिकायत शोर यह बरपा"
बड़ी भोली अदा से मुझसे वह इरशाद करते हैं।
लगाकर पाउडर कालेसे बन जाते हैं हम गोरे,
खुदासे जो न हो उसको भी आदम-जाद करते हैं।
नहीं कम हैं हसीं दुनियाँके न्यूटन या एडीसन से,
नया हर रोज़ वहभी तो सितम इजाद करते हैं।
तअज्जुब है कि उनकीभी नहीं लंदनकी मिस सुनती,
जो कालरसे गलेकोकर घोंट फरयाद करते हैं।

हजूर का आसरा

शिकवा नहीं न आपसे कोई गिला मुझे,
दे दीजिये जनाब मेरा दिल लिया मुझे।
थोड़ी सी पीके मिसने जो पेग दे दिया मुझे,
समझा बहिश्त आज जमींपर मिला मुझे।
होगी न कारगर कभी कोई दवा मुझे,
लंदनकी थोड़ी चाहिये ठंढी हवा मुझे।
कैसे पसंद खीर व हलुआ भला लगें,
होटलके केकी सूपका चसका लगा मुझे,
चेहरे पे रोज़ सोप रगड़ता हूँ बार बार,
उस परभी आप कहते हैं काला तवा मुझे।
मंत्रीके दरपे नाक रगड़ता हूँ रात दिन,
मेरी बलासे कहले कोई बेहया मुझे।
अकसीरसेभी बढ़के वह होगी मेरे लिये,
मिट्टीका तेल वह जो पिलावें ज़रा मुझे।
डिगरीसे नौकरी तो मिलैगी कभी नहीं,
बस आपका हजूर है एक आसरा मुझे।

गाली जो दीजिये तो वह इंगलिश में दीजिय,
करनी यही है आपसे एक इलतिजा मुझे।
मुद्दत से देखता हूँ नये साल का गज़ट,
'लायल' रहा मगर न मिला कुछ सिला मुझे।
'बेढब' का नाम लिस्ट में उनके नहीं मिला,
होनेका 'ग्रेट' कौनसा ज़रिया रहा मुझे।

मुसलमां होंगे

तेरे दीवानोंके फैशनके यह सामां होंगे,
'सेफ़्टी पिन' की जगह खारे-मुग़ीलां होंगे।

लेके डिगरी यह समझते थे कि होंगे डिपटी,
अब तो यह भी नहीं है 'चांस' कि दरबां होंगे।

हूर जन्नतमें मिलेगी यह है एक दूरकी बात,
साथ 'लेडीज' के हम आज ही रक़्सां होंगे।

लाटने हाथ मिलाया है जो मौलाना से,
रश्क पंडितको है अब वह भी मुसलमां होंगे।

पढ़के इंगलिश वह गये भूल 'मदर टंग' अपनी,
क्या कभी अपनी जबां भूलते हैवां होंगे।

नौकरी मिलती नहीं कोई तो कुछ फिक्र नहीं,
चलके ससुरालमें अब कुछ दिनों मेहमां होंगे।

आशिकोंको न कोई चीज 'क्रेडिट' पर देना,
रोज मरते हैं यह, फिर आप परेशां होंगे।

बाद मरनेके मेरी क़ब्रपर आल्लू बोना,
हश्रतक यह मेरे 'ब्रेक-फास्ट' के सामां होंगे।

उम्र सारी तो कटी घिसते कलम ए 'बेढब',
आखिरी वक्त में क्या खाक पहलवां होंगे।

रामदाना

चले अब बाल्डविन साहब यह 'लेबर' का जमाना है,
जनाज़ा कैपिटल वालोंका लन्दनसे रवाना है।
वह कहते हैं कि मुझको पार्टी में आज जाना है,
'हेडेक' है अब न 'बिजनेस' है, नया उनका बहाना है।
उन्हें तो आज सिनेमामें किसीके साथ जाना है,
जुदाईमें गज़ल लिख लिखके अब हमको भी गाना है।
मुझे तो लूटकर धीरेसे वह घरको रवाना है,
दुहाई यह मेरी सरकार कैसा कारखाना है।
ताज्जुब क्या बरहमन भी करे बोतलकी अब पूजा,
नया युग आ गया है आज ह्विस्कीका जमाना है।
मैं उनके बापके डरसे वहाँ तो जा नहीं सकता,
मगर हाँ डाकसे अपना यह ज़ख्मी दिल रवाना है।
मुहब्बत का न हो कुछ जोश दिलमें तो चलो सिनेमा,
वहाँ तो आशिकोंके ढालनेका कारखाना है।
हमारे नौजवां शैदा हुए इतने मिठाई पर,
मुहांसा भी मिसोंके मुँहका उनको रामदाना है।

डिगरियोंका बंडल

अगरचे 'ब्यूटी'—को लव करूँ मैं तो बात कोई बुरी नहीं है,
खुदाका 'जलवा' जो बुतमें देखूँ तो देखना काफिरी नहीं है।

मंगाके चुँगीसे एक रोलर चला दो दिलपर हमारे साहब,
मसलनेसे रोज चुटकियोंमें अगर तबीयत भरी नहीं है।

बहुत है 'इनकम' दिलोंकी तुमको कहीं न लग जाय टैक्स देखो,
जनाब आया है वह जमाना कि इससे कोई बरी नहीं है।

जनाबे प्रोफेसर हुए हैं आशिक, चले हैं वह नापने कमरेको,
नहीं है मालूम उनको शायद कि यह 'जियोमीटरी' नहीं है।

नहीं हुकूमत चलेगी उनपर फजूल हैं कोशिशें तुम्हारी,
यह है मुहब्बत की एक दुनियाँ जनाब यह 'टीचरी' नहीं है।

दिखाया टूटा हुआ दिल जो मैंने 'सरजन' को तो वह बोला,
बनेगा लंदनमें दिल तुम्हारा यहाँ यह कारीगर नहीं है।

यह आज होंगे हमारे मेहमां तो डर है क्या 'ट्री' पे टाल देंगे,
जरासा फैशनके होगा बाहर कि 'कप' तो है तश्तरी नहीं है।

पुराने कुछ सूट भी पड़े हैं, बकस में बंडल है डिगरियोंका,
हुजूर कहनेको हे जबां भी, मगर कहीं नौकरी नहीं है।

कलम न 'बेढब'—का रुक सकेगा, भरे हुए 'पारकर' पड़े हैं,
बला से चिल्लाके लोग कह लें, कि यह कोई शायरी नहीं है।

सिल्ली पर उसतरा

फीस लेकरभी बहाने वह सदा करते रहे,
डाक्टर माशूकसे क्या कम जफा करते रहे।
क्या बताएँ जाकर कौंसिलमें वह क्या करते रहे,
दावतें खाते थे, फिर लेक्चर दिया करते रहे।
दिलके दुश्मनसे ही हम दिलका गिला करते रहे,
दर्दकी हम आजतक उलटी दवा करते रहे।
आशिकोंकी जिन्दगी कटती रही इसी बात में,
बुतकी याद औ बेवफ़ाईका गिला करते रहे।
दाम होता साकिया तो कोई होटल क्या न था,
मुफ्त पीनेवाले तेरा आसरा करते रहे।
थी न जब ह्विसकी तो ठर्रा ही पिलाना था मुझे,
कबसे तेरी मिन्नतें हम साकिया करते रहे।
अब डिनर में जाएं कैसे लेके धोबी का जवाब,
मांगकर उससे तो वह कपड़े लिया करते रहे।
लड़ते हैं बीबीसे वह दिन रात यह कहते हुए,
सुनते हैं आदम भी हौव्वासे लड़ा करते रहे।
फेल जब मोटर हुई बोले कि इसको ठेलिये,
मुफ्तमें चढ़ता था, उसकी यह सजा करते रहे।

आज बंगलेपर मिनिस्टरके वह शायद जाँयगे,
तेज सिल्लीपर जो घंटों उस्तरा करते रहे।
अब जरा 'बेढब' मुहब्बत तुम जताना देखकर,
लोग छिप छिपकर मिनिस्टरसे गिला करते रहे।

जबांको संभालके

माशूककी गलीमें चलो देख भालके,
कतवार फेंकते हैं वह सीना उछालके।
आये हैं दिन जो आजकल उनके ज़वालके,
गाहकभी अब नहीं रहे लंदनके मालके।
वह क्या रिफार्मर जो न पीता हो ढालके,
बीबी वह क्या जो रहती हो बे 'बाबूड' बालके।
हैं आपभी अजीब पुराने खयालके,
चौकेमें खाने बैठे हैं जूता निकालके।
मालूम क्या कि आपने इंगलिशभी है पढ़ी,
खाते नहीं जो सुबहको अंडे उबालके।
आखिरको मेरी आँख लड़ी उनकी आँखसे,
क्या जंग यह हुई है बिना बोल-चालके।
आनरके वास्ते यह जरूरी है कार हो,
चाहे वह 'ओल्ड' हो व चले ठेल ठालके।
कोई शरीफ आपको कैसे कहे भला,
चलते हैं आप रेलपे बे 'होल्ड-आल' के।

अफसर नहीं पुलिसका है वह और होगा कुछ,
जो बोलता है अपनी जबाँको संभालके।
योरपकी सैरके लिए सब ठीक ठाक है,
हैं मँतजिर वह बापके बस इन्तकालके।
बुलबुलके चहचहेने उसे कैद कर लिया
'बेढब' जो बोलना तो जबाँको संभालके।

आतंक निग्रह पिल

जोश खूंमें है नहीं ताकत नहीं कुछ दिलमें है,
आसरा नेताका है मरजी उन्हींकी बिलमें है।

दूध-घी मिलता नहीं कसरत महज अब डिलमें है,
आजकल ताकत तो बस 'आतंक निग्रह-पिल' में है।

मीठी बातोंसे वह बहकाते हैं हमको बार बार,
उनकी बातोंकी कहाँ लज्जत शुगरकी मिलमें है।

बाप बूढ़ा घरमें है बैठा गोया दरबान है,
लेडियोंके साथ लड़का नाचता महफिलमें है।

पढ़के अंग्रेजीभी अच्छी नौकरी मिलती नहीं,
कोई क्लर्की कर रहा है, कोई भरती मिलमें है।

खैरियत उसकी नहीं है जिसपे पड़ जाये नजर,
आपकी आँखोंमें जो है वह कहाँ राइफिलमें है।

दें कहाँसे दान या चंदेमें रुपये आपको,
आजकल मेरा दिवाला होटलोंके बिलमें है।

'बाल'-के आगे नहीं बाकी मजा कुछ रासमें,
लुत्फ बंसीमें नहीं, जो कुछ है वह 'ब्यूगिल'-में है।

पूछता पंडितको कोई है न मौलानाकी अब,
पूछ 'बेढब' आजकल सरकारकी बस बिलमें है।

नमस्ते-बंदगी

न हो दिलमें वतनका प्रेम तो फिर क्या जवानी है,
न हो मस्ती अगर मयमें तो मय क्या है वह पानी है।

हमें बदनाम करनेकी जो इस बुढ़ियाने ठानी है,
यह मिस मेयो नहीं है, पूतनाकी खास नानी है।

पता मुझको नहीं कुछ इंडियामें भी है 'लिटरेचर',
मगर हां याद सारा मिलटनो-बेकन जबानी है।

जो हिस्ट्री कोई हिस्ट्री है तो वह योरपकी हिस्ट्री है,
हमारे देशकी हिस्ट्री तो एक झूठी कहानी है।

नजाकत औरतोंसी, बाल लंबे, साफ मूँछे हैं,
नये फैशनके लोगोंकी अजब सूरत जनानी है।

लचक पड़ता है झोंकेसे हवाके, क्या नजाकत है,
नहीं मिस्टरका है यह जिस्म, एक टहनी पुरानी है।

कदम रखा जहां दुनियांमें हमने, यह सदा आयी,
निकालो इसको यह तो 'ब्लैक' है हिंदोस्तानी है।

जनेऊ इनकी नेकटाई है, पाउडर इनका टीका है,
नये बाबूको ह्विस्की आजकल गंगाका पानी है।

पकड़ कर हाथ झकझोरो किसीसे जब मिलो 'बेढब',
नमस्ते-बंदगीकी जंगली आदत पुरानी है।

डारविनकी थियोरी

मूँछ मुड़वानेका उनको शौक पैदा हो गया,
अब तो मजनूँका भी चेहरा मिस्ले लैला हो गया।
सिरसे बढ़कर पांवका मिस्टर के रुतबा हो गया,
होकी टोपी हो गयी तो दसका जूता हो गया।
इतने दिन पर आपने मिलने-को लिखा है 'लेटर',
वस्लका शरबत मिला है जब वह सिरका हो गया।
पूछते हैं लोग उनको ही जहां जाते हैं वह,
एक गोरे रंगमें क्या रंग पैदा हो गया।
क्या हुआ करलीं इकट्ठी आपने जो डिगरियाँ,
सबसे अच्छी नौकरीमें जेल वाला हो गया।
अबभी तो वादा पुराना आप पूरा कीजिये,
इसरतें बूढ़ी हुईं औ मैं भी बूढ़ा हो गया।
बाकी है शौफरकी 'पे' पेट्रोल आता है उधार,
कारकी तो शान है लेकिन दिवाला हो गया।
नाचमें देखा मिसोंके साथ उनको कूदते,
डारविन साहबकी 'थियोरी'का खुलासा हो गया।

लेख 'फ्री', कागज 'क्रेडिट' पर, फंस गया रहीसा प्रेस,
जिसकी देखो अब वही अखबार वाला हो गया।
मैं समझता हूँ कि जन्नत मिल गयी मुझको यहीं,
दाखिला क़र्कीमें 'बेढब' आज अपना हो गया।

बेढबसे पाला

मेरे माशूकका दिल कोई अलबम या रिसाला है,
कोई वह म्युजियम है या कि कोई चित्रशाला है।

मिसोंकी जुल्फका उल्फतमें सौदा होने वाला है,
बयाना दे चुका दिल, और क्या दूँ अब तो ठाला है।

न पिस्टल है न राइफिल है, न खंजर है, न भाला है,
नया 'बेपन' निगाहोंका अजब तुमने निकाला है।

कलेजा जल गया, दिल दे चुका, अब और क्या लोगे,
बचा था फेफड़ा 'थाइसिस' ने डेरा उसमें डाला है।

मुड़ाई मूँछ, पहना सूट, पौडरभी मला मुँहपर,
मगर वह तो सदा कहती रहीं मुझको कि काला है।

एलेक्शनमें पड़ा जो वह नहीं बाहर निकल सकता,
सँभलकर जाइये इस ओर यह मकड़ीका जाला है।

जो इतने दिल लिये तुमने कहाँ रखे हैं बतलाओ,
'डिपाजिट' बंकमें है या कि यों ही बेच डाला है।

बना है ठाट मिस्टरका बड़े लीडर है पबलिक में,
मकानमें करते है फाके, गिरो घरका कबाला है।

इधर 'लव' में यह गरमी है कि पिघला जारहा है दिल,
इधर ठंडा है दिल उनका पड़ा 'बेढब' से पाला है।

नमकका डीपो

नये अंदाजके निकले वह कातिल देखते जाओ,
किया करते हैं वह मोटरसे घायल देखते जाओ।
खिलाकर मुझको दावत कहते हैं बिल देखते जाओ,
जरा होटलके लोगों, मेरी मुश्किल देखते जाओ।
वतनसे की मुहब्बत उसका हासिल देखते जाओ,
गलेमें तौक पावोंमें सलासिल देखते जाओ।
बहकनेसे विलायतमें नहीं कुछ काम चलनेका,
जरा भारतकाभी कुछ जोश 'चर्चिल' देखते जाओ।
न फाउंटेन पेन, न ऐनक है, न कालर है, न नेकटाई,
भला इनको कहेगा कौन काबिल देखते जाओ।
लिए सर्टिफिकेट आफिससे आफिस घूमते हैं हम,
यह सारी डिगरियोंका आज हासिल देखते जाओ।
मिसोंके साथ मिस्टर नाचते हैं बैंड बाजेपर,
नयी तहजीबकी कैसी है महफिल देखते जाओ।
भला क्या 'शार्टसाइटेड' हाल समझेगा मेरे दिलका,
जरा चश्मा लगाकर तुम मेरा दिल देखते जाओ।

जुदाईमें बराबर तार आँसूके निकलते हैं,
नहीं है आँख यह, आँसूकी है मिल देखते जाओ।
लगाकर मुँहपै पाउडर बीबियाँ अब मेम बनती हैं,
यह देसी भीतपर यूरपकी 'कहगिल' देखते जाओ।
हुई है जबसे पिकेटिंग बंद मैखाने हुए सारे,
जमी है क्लबमें अब रिंदोंकी महफिल देखते जाओ।
नमकके जितने 'छीपो' हैं, चढ़ाई आज है उनपर,
हसीनोंकी जहाँके अबतो मुशकिल देखते जाओ।
लिपस्टिक, क्रीम, पाउडर सब लगा रखा है चेहरेपर,
नई रंगीन पुस्तक की यह टाइटिल देखते जाओ।
कोई जब काम होता है बुला लेते हैं वह मुझको,
मगर करते नहीं दावतमें शामिल देखते जाओ।
जलाता है बहुत आहिस्ता आहिस्ता मेरे दिलको,
मेरा माशूकभी 'बेढब' है काहिल देखते जाओ।

मोटर कारकी चोट

'लंच'–के 'बैटिल फील्ड'—में डरते नहीं हम वारसे,
लड़ पड़ेंगे हम, न मानेंगे अगर वह प्यारसे।
पास मत आना, मगर मिलते तो रहना 'फार'–से,
बस मेरी 'रिक्वेस्ट' थोड़ी है यही सरकारसे।
दूरसे रौनक तुम्हारी और हो जाती है कुछ,
घाटकी ब्यूटी अगर कुछ है तो गंगा पारसे।
आपका असबाब तो क्या, मैं उठालूँ आपको,
मेहरबानी हो अगर लें काम मुझ बेगारसे।
रोब यों तो शहर भरमें है हमारा हर तरफ,
डर लगा करता है लेकिन उनके खिदमतगारसे।
डिगरियाँ करके इकट्ठी आफिसों की सैर की,
'वांटेड'–की लिस्ट अब चुनता हूँ मैं अखबारसे।
कोई मारा है अदाका कोई चितवनका शिकार,
मेरे सीनेपर लगी है चोट मोटर कारसे।
देखनेको है तड़पती आपको पर क्या करूँ,
जा नहीं सकतीं वहाँ आँखें हमारी तारसे।

आपका चेहरा ही काफी है डराने के लिए,
क्यों डराते हैं हमें तब तोप या तलवार से।
हाथ उनके दुख गये, पर वाह रे आशिकका दिल,
तुम न खिसके इंच भर भी लाठियोंकी मारसे।
क्या धरा 'मेरेज'—में है, है जिंदगीका लुत्फ तब,
जब कि लव हो जाय सिनेमाके किसी स्टारसे।
पास मैं रहता हूँ लेकिन मुझको 'सकसेस' कुछ नहीं,
हो गयी है 'कोर्टशिप' उनकी वहाँ तो तारसे।
करते हैं 'रिकेस्ट' 'बेढब' आप फिर लड़ते भी है,
यह शरारत आप करते है बहुत सरकारसे।

पत्थरकी सिल

आजकल पहले जमाने के रहे कातिल नहीं,
'कैश' ले लेते हैं वह करते हमें बिसमिल नहीं।
गर्ल वह 'मैरेज'—के हो सकती कभी काबिल नहीं,
जो किसी स्कूलके अंदर हुई दाखिल नहीं।
नाजका इतना न लादो बोझ नाजुक है बहुत,
आदमीका दिल है यह पत्थरकी कोई सिल नहीं।
उनके गीठे होठकी तारीफ जब करने लगा,
हँसके वह बोले कि यह कोई शुगरकी मिल नहीं।
'इनविटेशन' मिल गया, जाऊँ डिनरमें किस तरह,
पासमें मोटर नहीं, गाड़ी नहीं, साइकिल नहीं।
कार है, कोठी है, बँगला है, बहुत है बंकमें,
कुछ नहीं है उनके दिल में जब हमारा दिल नहीं।
तुम अगर चाहो कि मैं तुम पर मरूँ यह है कठिन,
हां करा दो जान बीमा तब कोई मुश्किल नहीं।
उनके लबमें काम चल सकता नहीं दिलसे महज,
जेब कर देते हैं खाली, सिर्फ लेते दिल नहीं।

गम मनाता बापके मरनेका लेकिन क्या करूँ,
नामकी मेरे उन्होंने कोई छोड़ी 'बिल' नहीं।
हो न चेस्टर पास तो ले लो मुझे तुम साथमें,
सख्त है सरदी तुम्हें लग जाय देखो 'चिल' नहीं।
किस तरह 'बेढब' लिखें अब 'झूमरस' कविता जनाब,
'ब्रेन' सिरमें है नहीं, पहलूमें उनके दिल नहीं।

दिलका सेल

थोड़ीसी ह्विस्की मिले, पीनेको थोड़ा 'एल' हो,
दालमें परवा नहीं, जो घीके बदले तेल हो।
लोग गधाभी नहीं रखते जो वह बे 'टेल' हो,
वह तुम्हें रखेंगे कैसे, तुम तो बी० ए० 'फेल' हो।
मैं नहीं पीता, मगर इसके लिये तैयार हूँ,
पीलूँ उनके हाथसे मिट्टीका चाहे तेल हो।
भिखारियोंकी पूछ थी पहले मगर वहभी गयी,
अब तो दो की पूछ है, हरिजन हो या 'फीमेल' हो।
नौकरी क्या शादियाँ भी आजकल दुशवार हैं,
पासमें जब तक न बी० ए० या एम० ए० की 'टेल' हो।
ए गुनहगारों डरो मत होगा अब आसाँ सफर,
सोच क्या है, अब तो शायद नर्क तकभी रेल हो।
उनका लड़का लबके कालेजमें एल. एल. डी होगया,
अब नहीं परवा अगर बी० ए०—में बरसों 'फेल' हो।
उनकी तिरछी माँग, तिरछी है नजर, तिरछी भवें,
हम हैं सीधे आदमी फिर उनसे कैसे मेल हो।
बेचनेके वास्ते हम मुफ्तमें तैयार हैं,
प्रेमके बाजारमें 'बेढब' जो दिलका 'सेल' हो।

सीनेका दर्द

गालियाँ इङ्गलिशमें देते थे मज़ा आता रहा।
'फूल' कह कर हंस दिये सारा गिला जाता रहा।
आज उतनी 'पे' नहीं मिलती कहींपर भी मुझे,
कालेजोंमें जिस कदर इनआम मैं पाता रहा।
जो सिविल सरजनने 'प्रेसक्रिपशन' लिखे बेकार थे,
उनका खत सीनेपे रखा दर्द सब जाता रहा।
पश्चिमी तहजीब बंगलेपर मुझे आई नजर,
साथ कुत्तेके वह अपनी मेज़पर खाता रहा।
'एकटिंग'-ने दिया धोखा सिनेमामें मुझे,
देखकर तसबीर चलती फिरती दिल जाता रहा।
बत्तियाँ बिजलीकी सड़कों पर बनारसमें लगीं,
रातमें 'वार्किंग'-का पहला सा मज़ा जाता रहा।
यह भी कोई पालिसी होगी हमारे 'हार्ट'-की,
क्या कहूँ क्यों बेकहे 'पहलू'-से दिल जाता रहा।
क्या समझते थे कि मैं स्पीच देता था वहाँ,
सुनने वाले यह समझते थे कि चिल्लाता रहा।

आज देखा है गजटमें हो गया तहसीलदार,
जंट साहबको जो कल तक बूट पहनाता रहा।
हो गये लीडर जो 'बेढब' बात उसमें एक है,
लेकचरोंके जोरसे जनता को बहकाता रहा।

खाली

तुम्हें सिनेमासे कम फुरसत है, हम ट्यूशनसे कम खाली,
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली।

ठहरना सामने उनके हमारा है भरम खाली,
भरी पिस्तौल उधर उनकी इधर अपनी कलम खाली।

वहाँ ह्विस्कीके हो जाते हैं पीपे एक दम खाली,
यहाँ क्या-हाथ खाली, पेट खाली और हम खाली।

भला कैसे सुनेंगे वह हमारी आरजू मिन्नत,
उन्हें तो कानमें आती है एक आवाजे बम काली।

नहीं हम मांगते कुछ आपसे बस आरजू यह है,
हमारे हालपर कर दीजिये साहब करम खाली।

हमारा दिलभी वह लेकर गये अफसोस इसका है,
न होता गम अगर वह ले गये होते रकम खाली।
कलम घिस जाय उनकी बेवफाई मैं अगर लिखूँ,
बने एक पुस्तकालय जो लिखूँ उनके सितम खाली।
जिधर सिगरेटका उड़ता था धुँआ सब लोग जा बैठे,
इधर हम आह भरते रह गये लेकर चिलम खाली।
न जर घरमें, न दिल पहलूमें, उस पर प्रेमका सौदा,
जरा भर लीजिये 'बेढब' तो अपना यह शिकम खाली।

आज बुद्धुभी कलक्टर हो गये

साफ जब दो चार कंटर हो गये,
हमने समझा हम कलक्टर हो गये।
अब खुदाका भी नहीं है डर उन्हें,
पीके एक चुक्कड़ बहादुर हो गये।
एक चिल्लूने किया इतना 'रिफार्म',
राहके कुत्ते बिरादर हो गये।
सारी दुनियाँ अब उन्हें घर हो गयी,
राहके कंकड़भी बिस्तर हो गये।
चूम लेते हैं कभी कुत्ते भी मुँह,
आपके आशिक तो 'टेरियर' हो गये।
पीके बेहरकत पड़े हैं 'रोड' पर,
आदमीसे आप 'न्यूटर' हो गये।
त्याग सिखलाती है सबको यह शराब,
बेच कर सब कुछ कलंदर हो गये।
जिस जगह चाहा वहीं सोने लगे,
पीके हिसकी 'फुल सलीपर' हो गये।

एक चुक्कड़ने दिखाया यह असर,
शेखजी बिल्कुल छछून्दर हो गये।
पीके जूठी लाट साहबकी शराब,
'आनरेरी' वह मजदूर हो गये।
क्या बताएँ क्या मजा ह्विस्कीमें है,
पीते पीते हम एडिटर हो गये।
देखिये 'बेढब' पिकेटिंगका असर,
आदमी सरकारके सर हो गये।

हैजलिन लगाते हैं

खुदासे रात दिन हम खैरियत उनकी मनाते हैं,
निडर होकर मजे से घूस लेना जो सिखाते हैं।
शिकायत उनकी नाहक हम जबाँपर अपनी लाते हैं,
यही क्या कम है हमको सामने अपने बुलाते हैं।
हमें क्यों लोग बातें दूसरी कहना सिखाते हैं,
जबां उनकी है अपना मुँह है उनका राग गाते हैं।
अगर दो गालियाँ देदीं लगादी बूटसे ठोकर,
बिगड़िये मत यह इज्जत है मुहब्बत वह जताते हैं।
नकल साहबके खानेकी जो की एक रोज हाटलमें,
कटा मुँह, धँस गये काँटे, दवा अब तक लगाते हैं।
बड़ी 'इन्सल्ट' है मेरी जो कहना बापका गानूँ,
नहीं इङ्गलिश पढ़ी और रोब वह इतना जमाते हैं।
चमकते हैं बराबर फेस और पेटेंट शूज़ उनके,
वह काले मुँह पै अपने जब कभी हैज़लिन लगाते हैं।
न बदरीनाथ जाते हैं, न अब जाते है वह काशी,
मिसोंके दरशनों को लंदनो—पैरिस वह जाते हैं।

तअज्जुब क्या अगर इनपर भी हैं आँखें लगी सबकी,
म्युनिसपलटीके मेंबर भी सुना है अब कमाते हैं।
किसी लीडरसे हम अपनेको फिर कम किस तरह समझें,
तुम्हें मालूम क्या हमने भी दो गज सूत काते हैं।
सुना है प्रेमियोंका 'राउंड' टेबुल आज बैठेगा,
इसीसे आज 'बेढब' को वह बंगलेपर बुलाते हैं।

सरविस का डर

पड़ी है जान आफ़तमें करूँ मैं ध्यान किस-किसका,
इधर 'सरविस' है कालेजकी, उधर लव दिलमें है मिसका।

उन्हें स्कूलकी धुन है, हमें है ध्यान आफिसका,
पकाये कौन खाना बहस है यह काम है किसका।

पहन कर सूट डिगरी लेके क्लर्की खोजते हैं हम,
पढ़ी दस साल अंग्रेजी यही अंजाम है इसका।

जुदाईमें तड़पनेकी जरूरत अब नहीं कुछ भी,
चला है रेडियोसे आजकल 'सिस्टम' नया 'किस' का।

वह कहते हैं कि डँड बैठक तो करतब है गँवारोंका,
जमाना आजकल है 'बैडमिंटन' और 'टेनिस' का।

टपक कर छतसे पानी जबकि भर जाता है सावनमें,
मजा आता है अपने झोंपड़ेमें हमको 'वेनिस' का।

हुए 'बाटनी'-में बी एस सी पढ़ा 'क्राइसेंथिमम' क्या है,
पता लेकिन नहीं, है फूल गेंदेका कि नरगिसका।

चले सायंसके बल पर हटाने 'गाड'-को मिस्टर,
मगर तिल भरभी वह अपनी जगहसे तो नहीं खिसका।

लिखाते नाम उनके आशिकोंकी 'लिस्ट' में हम भी,
अगर होता न 'बेढब' हमको डर थोड़ासा सरविसका।

टीचरी

तुम्हारे 'फेस'—पर बेहद है 'लस्टर',
उजाला रातमें कर दो मेरा घर।
रहूँ बेफिक्र अन्दर और बाहर,
जो खुश हो जाँय बीवी औ मिनिस्टर।
नहीं है हैट बाबूजीके सिरपर,
पड़ा है झोपड़ीपर एक छप्पर।
म्युनिसपलटी मुझे जो 'परमिशन' दे,
बना लें हमभी घर उनकी सड़कपर।
अकेले मैं अगर पा जाऊँ उनको,
लिपट जाऊँ गलेसे जैसे मफलर।
कहाँ मिलता है घी दूध और मक्खन,
रहे 'टानिक' टमाटर और चुकंदर।
बसे रहते हैं फूलोंमें सदा जो,
यह भँवरे हैं कि हैं 'बाटनी'-के प्रोफेसर।
जो वे मूँछोंकी दुनियाँ बाढ़पर है,
भला समझेंगे कैसे लोग 'जेंडर'।

जो नेचरसे मिली बैंगनकी सूरत,
टमाटर बन गये पाउडर लगाकर।
हुए एम ए किया फिर पास एल टी,
मिली 'पे' फिर भी सत्तर या बहत्तर।
इसीको टीचरी कहते है 'बेढब',
करो कापी 'करेक्शन' जिंदगी भर।

कर्म

कुछ नहीं मालूम 'लव'-का मर्म है,
प्रेमका बाजार लेकिन गर्म है।
जिसको देखो बन गया 'पोएट' वही,
आजकल कविताका फैला 'जर्म' है।
धक्के ठोकर सब तरफ जब कुछ न हो,
लीडरी आसान सबसे कर्म है।
उनको बीबी कहती है 'ओ डियर ब्याय',
क्या ही कानोंको मधुर यह 'टर्म' है।
कानमें धीरेसे करता हूँ 'प्रोपोज',
दिल अभी उनका निहायत नर्म है।
उनसे सब बातोंमें बढ़ जाऊँ तो क्या,
मेरा काला, उनका उजला चर्म है।
उनका साया घुटनोंके ऊपर उठा,
आजकल इतनीभी क्या कम शर्म है।
मार्कस की माला सवेरे तुम जपो,
अब यह 'बेढब' तुम्हारा धर्म है।

बे भंगकी ठंडाई

हुआ हूँ जबसे मैं 'यूरोपियन-ब्यूटी'-का शैदाई,
बिके सब 'फरनीचर' बाकी नहीं पाकेट एक पाई।
गये जब डिगरियाँ लेकर तो बँगलेसे सदा आई,
चले हैं नौकरी लेने न कालर है न नेकटाई।
वकालत पास करके डिप्लोमामें लग गई काई,
कचहरी रोज जाता हूँ मगर पाता नहीं पाई।
न पूछो हाल कुछ भी तुम वकीलोंसे कचहरीका,
जो बैठे 'बार'-में तो मार ही लेते हैं कुछ 'फ्लाई'।
मुझे लगता है डर भूकंप कालेजमें न आ जाये,
एकाएक जब कभी दरजेमें वह लेती हैं अंगड़ाई।
टमाटरसा है चेहरा और चमचमसे हैं होठ उनके,
'विटामिन' औ मिठाई मिल गयी हैं हमको यकजाई।
नशा दिलमें न हो 'बेढब' तो बे-लज्जत जवानी है,
भला बे भंगके किस कामकी होती है ठंडाई।

अजीब फूल

जब न दोनोंका चूल-चूल मिले,
हम समझते वह फ़जूल मिले।
उनकी आँखोंसे लड़ गयीं आँखें,
यह लड़ाईके खूब 'टूल' मिले।
क्यों न आँखोंमें मेरी आ बैठो,
चाहते हो जो 'रूम' कुल मिले।
दो मेरा दिल, अगर न दो अपना,
सूद बाज़ आये हम, जो मूल मिले।
राहमें प्रेमके चुभे काँटे,
आम बोये मगर बबूल मिले।
ज़िक्र वादोंका सुनके वह बोले,
तुमभी हमको अजीब 'फूल' मिले।
चलके 'बेढब' वहीं रहो अब तुम,
प्रेमका जिस जगह कि 'रूल' मिले।

अखरोटका फ्रूट

जब कभी आता है 'सीजन' वोटका,
खूब बढ़ जाता है 'बिजनेस' नोटका।
मर रहे हैं आज जब खाने बगैर,
कोई भी कहता नहीं यह लो टका।
रातमें खिसकी औ दिनमें लीडरी,
'प्रेट' बननेका यही है टोटका।
हो न जब पैसा तो बीबी 'फिक' करै,
सेठ भी झुक कर मिलें जो हो टका।
सख्त है परदा मगर चेहरा है 'रफ',
सुत नहीं यह 'फ्रूट' है अखरोटका।
रोज मैं मिलता गलेसे आपके,
बन गया होता जो कालर कोट का।
पेट 'पबलिशरों'-का यों है बढ़ रहा,
जिस तरह बढ़ता है धन 'शी-गोट'-का।
दर्दमें ही लुत्फ रहता है यहाँ,
क्या अजब है हाल दिलकी चोटका।

'जंपर' औ सारीमें सब 'पे' खत्म है,
फिर कहाँसे दाम आये कोट का।
माँगते हैं लोग कविता रोज-रोज,
यह नहीं कहते कि 'बेढब' लो टका।

ट्रंकके आगे पिटारा

घर हमारा पर हमारा कुछ नहीं,
हिंदमें हिंदू बिचारा कुछ नहीं।
लूट कर मुझको अदासे कह गये,
सब हमारा है तुम्हारा कुछ नहीं।
सामने साहबके हम क्या चीज हैं,
ट्रंकके आगे पिटारा कुछ नहीं।
रो के कौंसिलमें किये प्रस्ताव पास,
और उनका यह इशारा कुछ नहीं।
उनका धोबी भी कलक्टर हो गया,
औ यहाँ एम ए बिचारा कुछ नहीं।
जब नहीं 'पावर', एजीटेशन फजूल,
दाँत हों गायब तो आरा कुछ नहीं।
लौटकर लंदनसे कहते हैं सपूत,
यह 'रबिश' भारत हमारा कुछ नहीं।
वह कहें 'यू डैम', हम बोलें 'हजूर',
इससे 'ब्यूटीफुल' नजारा कुछ नहीं।

बाल कटवाए न मुँहमें है सिगार,
तुमने बीबीको सुधारा कुछ नहीं।
दूध घी जब हो न 'टानिक' क्या करे,
जब नहीं ईंटें तो गारा कुछ नहीं।
कैसे कहते हो कि पत्थर है वह दिल,
प्रेमका उसमें शरारा कुछ नहीं।
रेत तो फाँकी अरबकी शेखने,
और उसे गंगाकी धारा कुछ नहीं।
ठोकरें खाओ बुतोंके संगमें,
और 'बेढब' तुमको चारा कुछ नहीं।

डायरके चाचा

जरा सी बात पर इतने खफ़ा हो,
न समझा था कि डायर के चचा हो।
तुम्हें मैं मान लूँगा तुम खुदा हो,
मगर उस वक्त जब मुझ पर दया हो।
तुम्हीहो 'आमलेट' औ 'केक'-बिस्कुट',
तुम्ही होटलके—कटलट-कोरमा हो।
तुआएँ माँगते हैं उनके प्रेमी,
जो वह गाली दें उसमें भी मजा हो।
हमें क्या राहमें ही देख लेंगे,
तुम्हारा उनके घर जाना भला हो।
कहीं मिल जाय एक मोदर पुरानी,
समझ लो बस रईसे इण्डिया हो।
यह बीबीकी हो 'कालीफिकेशन',
हसीं हो, कुछ पढ़ी हो, बेहया हो।
नयी दुनिया नयी अब रोशनी है,
जरूरत है नया अब देवता हो।

बनें फौरन वह हिन्दू से मुसलमाँ,
अगर 'सरविस'-का कुछ भी आसरा हो।
हमारा घरभी कर दो आके रोशन,
कि तुम बे तेल बत्तीके दिया हो।
मिठाईकी नहीं है चाह 'बेढब',
भजा आलूमें है जो चटपटा हो।

खुला जंफर

उनकी मसजिद खुल गयी है उनका गिरजाघर खुला,
बुत अभी परदेमें हैं अब तक नहीं मंदिर खुला।

देखिये चेहरा खुला, बाहें खुली औ सर खुला,
जल्द आयेगा नज़र उनका हमें जंफर खुला।

कमसे कम तो दो तरक्की हमको आती है नज़र,
बीबीयोंका मुँह खुला, औ बाबुओंका सर खुला।

हो रही थी बात जबतक खूब बहलाते रहे,
मुझको रुखसत कर दिया ह्विस्कीका जब कंटर खुला।

बोरडिंग हाउस हुए कायम हर एक स्कूलमें,
सिगरेटों बीड़ीके पीनेका नया ढब घर खुला।

नौकरीकी खोजमें यों घूमते हैं ग्रेजुएट,
घूमता है जिस तरह धोबीका कोई खर खुला।

क्या खुलेगा गेट होटलका तुम्हारे वास्ते,
जब न मैखानेका 'बेढब' रातमें टट्टर खुला।

पश्चिमकी हवा

बस एक उनकी अदा है और मैं हूँ।
मुकद्दरका बदा है और मैं हूँ।
वफाओंपर जफा है और मैं हूँ,
यह किसमतका लिखा है और मैं हूँ।
जिधर देखो बला है और मैं हूँ,
गजबका उनका 'ला' है और मैं हूँ।
मिले डिगरी अगर बिक जाय घर तक,
यही सौदा नया है और मैं हूँ।
वहाँ बे मूँछ वालोंकी है महफिल,
यह मूछोंकी बला है और मैं हूँ।
जो आये सूटमें पास उनके बैठे,
मेरा कुरता फटा है और मैं हूँ।
तुम्हें मशहूर कर रखा है मैंने,
तुम्हारा तजकिरा है और मैं हूँ।
सुना है जबसे होगी वार उनसे,
यह 'टानिक'-की दवा है और मैं हूँ।

नहीं खाता मलाई और मक्खन,
दहीका बस बड़ा है और मैं हूँ।
खड़ा रहता है दरवाजा वह रोके,
यह प्रियतमका चचा है और मैं हूँ।
मेरा छाता उठाकर चल दिये वह,
यह सावनकी घटा है और मैं हूँ।
मेरे घरमें नहीं पाओगे तुम कुछ,
यही मेरी कला है और मैं हूँ।
उड़ा जाता हूँ कनकौएसा 'बेढब'
यह पश्चिमकी हवा है और मैं हूँ।

मंकी ग्लैंड

हाथ मेरा हो जो उनके हैंडमें,
मैं समझ लूँ हूँ 'हेवेन'-के 'लैंड'-में।
दिल हमारा और है उनकी तरफ,
'अलस्टर' है जैसे 'आयर लैंड'-में।
हिंद में मानो न मानो तुम उन्हें,
कद्र है उनकी बहुत इंडलैंडमें।
क्या सुनें शहनाई हम बेवक्तकी,
दिल हमारा बंध गया है बैंडमें।
कौंसिलका अब 'सहारा' है मिला,
हम चले हल चलाने 'सैंड'-में।
हेल्थ सुधारेगी न भारतमें कभी,
ठीक हो सकते हैं स्विटज़रलैंडमें।
अक्ल डंकीमें वह ढूँढ़ेंगे कभी,
'यूथ' जो पाते हैं 'मंकी-ग्लैंड'-में।
कौन 'बेढब' हमको पूछेगा कहीं,
जब नहीं है पूछ अपने लैंडमें।

कोर्टशिप-गगनमें

मैं खोजता था उनको जब कुञ्ज और वनमें,
वह खेलती थी 'कैरम' एक मित्रके सदनमें।
पड़ता नहीं है धरतीपर पांव उनका तबसे,
जबसे सुना है होती है 'कोर्टशिप' गगनमें।
उनसे कहा कि थोड़ा 'मानस'-का पाठ करलो,
बोलीं कि मन हमारा लगता है 'बायरन'-में।
उनकी निगाह घायल कितनोंको कर चुकी है,
ताकत न होगी इतनी शायद मशीनगनमें।
'सरविस'-की धुनमें मैंने दुनियाकी खाक छानी,
अब भंग छानता हूँ मल कर भभूत तनमें।
छोड़ी है भात रोटी 'विटेमिनकी' धुनमें मैंने,
अब घास चर रहा हूँ दिन रात मैं चमनमें।
फिसले न दिल हमारा लंदनकी ओर क्यों कर,
है 'पोलसन'-का मक्खन हर एकके 'किचन'-में।
स्कूलकी पढ़ाईमें क्या धरा है 'बेढब',
शिक्षा तो मिल रही है सिनेमाके हर भवनमें।

सोया-बीन

लेके मंचूकों नजर जापानकी है चीनपर,
खाके मीठा लालची जैसे झुके नमकीनपर।

हम नहीं दुनियाँके आशिक हम न लट्टू दीनपर,
हम फिदा हैं आपकी इस नित नयी तसकीनपर।

रेडियोपर सारी दुनियाँको नचा देते हैं वह,
ध्यानभी देता नहीं कोई हमारी बीनपर।

मरना जीना है निगाहोंपर तुमारी मुनहसर,
जिंदगीकी नीव है रखी हुई संगीनपर।

देखता हूँ जैसे इन आँखोंसे जलवा आपका,
जब नजर आती है प्रेटा गारबो 'स्क्रीन'-पर।

दूध घी मक्खन तुम्हारे वास्ते तैयार हैं,
काट लेंगे जिंदगी हम अपनी सोया बीनपर।

फूलका बरतन तो रखते इन दिनों बस फूल हैं,
सभ्यता है इस जमानेकी खड़ी बस टीन पर।

लूट है, सिनेमा है, या तो है कहीं की मेम्बरी,
आज है संसारकी गाड़ी चली इस तीन पर।

आज वहभी टाटपर 'बेढब' पड़े हैं सो रहे,
पाँव नाजुक जिनके छिलजाते कभी कालीनपर।

बेकार जहाज हवाई है

जब दिलमें ताकत कुछभी नहीं,
सब बे मतलबकी ढिठाई है।
'रिजोल्यूशन' सारा रोना है,
सरपर बेकार पिटाई है।
'डिसपेपटिक' है 'नेशन' सारी,
आंखोंमें रतौंधी छायी है।
क्लर्की भी जब मिलनेकी नहीं,
कालेजकी फजूल रटायी है।
जब रंग नहीं अपना गोरा,
क्या कालर क्या नेकटाई है।
एक मिस कमसिन जब साथ न हो,
मूँछोंकी फजूल सफायी है।
'पापा' हैं, क्लब है, नाच है, अब,
'बेयरा' है 'गारजियन' उनका।
मामा हैं, जाल टेनिसका है।
घर है, बच्चा है, दायी है।

हमको मंदिरसे क्या मतलब,
पूजासे क्या मिलनेको है।
हम तो हैं साहबके बंदे,
बँगला है और दोहाई है।
क्यों इतनी फौजें रखी हैं,
तुम कह दो हम मर जायेंगे,
एक तिरछी चितवन काफी है,
बेकार जहाज हवाई है।
बीबीसे भी घरके अंदर,
तुम बात न कुछ 'बेदब' करना,
मालूम नहीं है क्या तुमको,
घर-घरमें अब 'स्पाई' है।

मलाई है

आँख तो आँखसे लड़ आयी है,
दिलमें फिर क्यों कसक समायी है।
'गाइ'-को उनके डर है 'म्यूजिक'-से,
नयी दुलहिनसा वह भी 'शाई' है।
मुँह भरा यह नहीं मुहासोंसे,
रामदानेकी मीठी लाई है।
उनकी तसवीर मिल गयी मुझको,
उम्र भरकी यही कमाई है,
देखते ही फिसल पड़ा यह दिल,
उनका चेहरा नहीं मलाई है।
इस तरह हैं हमारे दिलपर वह,
जिस तरह मूसपर बिलाई है।
क्यों न मुझको जलाये वह प्रियतम,
बेचता वह दियासलाई है।
याद करता हूँ उनको जाड़ेमें,
अब तो 'बेढब' यही रजाई है।

वाटरफाल

हिज्रमें उनके हमारा आजकल यह हाल है,
मुँह बना है 'वालकेनो' आँख 'वाटर फाल' है।

वह कहाँ तक प्रेमियोंको अपने दिलमें दे जगह,
उनका दिल है यह नहीं काशीका टाउनहाल है।

लवके लीडर गर्म स्पीचें सुनाते हैं उन्हें,
उनका घर अब घर नहीं है, कांग्रेस 'पंडाल' है।

वह मेरे ऊपर किया करते हैं 'किक'-की 'प्राकटिस',
यह बदन मेरा अब उनके वास्ते फुटबाल है।

उनका चलना देखकर फिरकीका आता है मजा,
पढ़के कालेजमें यही सीखी उन्होंने चाल है।

खींच लेते हैं वह अपनी ओर जल्दी रेलसे,
फांसनेको तारका फैला हुआ एक जाल है।

बाबुओंका खेल अब 'पिंगपांग' है या है 'केरम',
बीबियोंका 'गेम' अब हाकी है या फुटबाल है।

बचके हम जांये किधर जीना कठिन अब हो गया,
तिरछी चितवन है इधर तो उस तरफ भूचाल है।

मांगते क्या चीज हैं कल, आज तो दिल ले गये,
'लव'के 'इश्योरेंस'का 'बेढब' यह पहला काल है।

ऊँटोंका राष्ट्र गान

चीनो अरब सहारा हिंदोस्तां हमारा,
हम ऊँट है वतन है सारा जहां हमारा।

लाकर वह रेलो-मोटर हमको मिटा रहे हैं,
बालूसे बस है बाकी नामों निशां हमारा।

हिम्मत कहाँ किसीकी आ जाये सामने जो,
चलता है बलबलाता जब कारवाँ हमारा।

हमको खजूर भाता, आशिक बबूलके हम,
तुम आम लेके चाटो क्या है जयां हमारा।

गुलशनमें क्या धरा है खूबी है क्या चमनमें,
मैदां सपाट बालूका गुलखितां हमारा।

अंग्रेजके भी 'लायल' हम वारमें रहे हैं,
लन्दनसे आके कोई ले ले बयां हमारा।

फजलुहक और जिन्ना वह दिन हैं याद तुमको,
तुम लोग हांकते थे जब कारवाँ हमारा।

अफसोस कुछ न करता कोई मदद हमारी,
मालूम क्या नहीं है दरदे निहाँ हमारा।

बालूसे हम हैं पैदा बालूमें जायँगे हम,
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा।

विश्वके विषय

रूपके बाजारमें यों प्रेम परखा जा रहा है,
सूट कोई और कोई पासबुक दिखला रहा है।

शीशियोंमें सेन्टके हैं स्नेहको कुछ लोग भरते,
साड़ियोंका ढेर कोई बीन-बीन लगा रहा है।

हो रहा है चाहका सौदा कहींपर 'रेसतराँ में'
मूल्य कोई फिल्मके बाजारमें भुगता रहा है।

मोल लेनेको हृदय साहित्यका भी है सहारा,
रेतकर अपने गलेको गीत कोई गा रहा है।

वह जलन दिलमें कहाँ जो दूसरोंका दिल जलादे,
बल्बका है मंच, अभिनय नव-शलभ दिखला रहा है।

और कवि-सम्मेलनोंमें भी हृदयका हाट लगता,
दिल चुरानेके लिये कवि सैकड़ों बल खा रहा है।

प्रेमकी हो राह चिकनी इसलिये मुँह साफ करते,
मूँछ दाढ़ीको सवेरे शाम मूँड़ा जा रहा है।

नित्य होती हैं समर्पण पुस्तकोंपर पुस्तकें भी,
पारितोषिकसे किसीको आदमी बहका रहा है।

बे लिये वेतन पढ़ानेको युवक तैयार बैठा,
विश्वके सारे विषय 'बेढब' उन्हें सिखला रहा है।

सरकार हूँ मैं

लिये सब ज्ञानका भंडार हूँ मैं,
मगर पैसे बिना लाचार हूँ मैं।
मुझे इस भाँति क्यों फेंका बताओ,
कोई कूड़ा कोई कतवार हूँ मैं।
लगी रहती है फरमाइश तुम्हारी,
समझते हो कोई बाजार हूँ मैं।
नहीं कुछ पुस्तकालयमें धरा है,
तुम्हारे वास्ते अखबार हूँ मैं।
भटकता हूँ, न जीवनमें कहीं सुख,
किसीका एक खोया प्यार हूँ मैं।
कहा करता हूँ मैं तो गर रहा हूँ,
कोई कहता नहीं—बीमार हूँ मैं।
मिलेंगे अब, वह हैं पेट्रोल पूरे,
यहाँ मादक सुराका सार हूँ मैं।
वहाँ अंडा यहाँ बन्डेकी भाँजी,
वह हैं उस पार और इस पार हूँ मैं।

गले लगना तो क्या, छूते नहीं वह ,
कोई क्या शेरसा खूँखार हूँ मैं ।
मेरा सौदा न साधारण समझना ,
हृदयका कर रहा व्यापार हूँ मैं ।
न तुम मिलते न कागज मिल रहा है ,
लिखूँ क्या आजकल बेकार हूँ मैं ।
उन्हींके गिर्द मँड़राता हूँ 'बेढब' ,
वह हैं सेन्टर बने सरकार हूँ मैं ।

कैरमकी गोटी

हमारे देशमें इस तरह दाढ़ी और चोटी है,
लड़ा करती खटाखट जिस तरह कैरमकी गोटी है।

नरम हाँथोंकी है यह चाय जो कुछ हो मज़ा इसमें,
नहीं तो है न चीनी, साथ में मक्खन, न रोटी है।

कहा बीबीसे खाना झट बना दो भूख है गहरी,
कहा पहले जरा सुनलो—तराना यह झिंझोटी है।

हुआ झगड़ा सवेरेसे कि हम पहने कि तुम पहनो,
परेशानी बहुत है एक ही घरमें लँगोटी है।

मुहब्बत है, शरारत है, अदा है, या कि क्या है यह,
कहो कुछ बात सीधी भी जवाब उनका चिकोटी है।

बहुत ही खूबसूरत है चमक भी है सफेदी भी,
मगर इतना समझ रक्खो हिमालयकी वह चोटी है।

कभी सुनते भी हैं तो कुछ समझते ही नहीं 'बेढब'
बहुत सीधे भी हैं, दुबले भी है, कुछ अक्ल मोटी है।

बिठाये बैठे हैं

खार क्यों आप खाये बैठे हैं,
फूल हम तो बिछाये बैठे हैं।

कांग्रेस राजमें जबरदस्ती,
वह मेरा दिल दबाये बैठे हैं।

यह सितम, यह गजब, यह बेदरदी,
सिरपे दुनियाँ उठाये बैठे हैं।

दिल ही होता तो कुछ गनीमत थी,
वह मुझीको चुराये बैठे हैं।

खाके होटलसे वह गये भटसे,
और हम शर्म खाये बैठे हैं।

यह जमाना तो है नुमाइशका,
आप क्यों मुँह छिपाये बैठे हैं।

उनकी धुन है कि हम न आयेंगे,
हम भी धूनी रमाये बैठे हैं।

आपने ही बिगाड़ की मुझसे,
आप ही मुँह बनाये बैठे हैं।

वह चलें चाल कितनी है 'बेढब',
हम तो दिलमें बिठाये बैठे हैं।

पतलून पहनता हूँ मैं

उनके घरके सामने जिस दम पहुँच जाता हूँ मैं,
दंड बैठक और कसरत करके दिखलाता हूँ मैं।
चलती है तलवारसे भी तेजतर उनकी जबाँ,
हजरते चर्चिलसे भी बढ़कर उन्हें पाता हूँ मैं।
यादमें फूटा है चश्मा आँसुओंका आँखसे,
अब तो वाटर-वर्क्ससे ही आँख बनवाता हूँ मैं।
जागता रहता हूँ जब-तक सामने तस्वीर है,
नींदमें बस नाम ले ले करके बर्राता हूँ मैं।
गोलियाँ बन्दूककी खानेकी तो हिम्मत नहीं,
गोलियाँ पाचककी लेकिन शामको खाता हूँ मैं।
केश रञ्जन तेल मैंने भेंटमें उनको दिया,
अपने फँसनेके लिए खुद जाल बुनवाता हूँ मैं।
वह गरजते हैं यहाँपर दिलमें उठती है चमक,
आँख बदली है उधर और मेह बरसाता हूँ मैं।
खूनका कतरा निकल आँखोंमें आँसू बन गया,
उनकी खातिर लालको मोती बना लाता हूँ मैं।

अब जुदाईकी घड़ीमें यादमें रोता नहीं,
दर्द सारा बह न जाये इससे घबराता हूँ मैं।
कार्डपर साड़ी न एकलाई न बायल ही मिला,
अपनी उतरी उनको बस पतलून पहनाता हूँ मैं।
जिसका जी हो जो कहे मैं अपनी धुनमें मस्त हूँ,
एक मेरा राग 'बेढब' बस वही गाता हूँ मैं।

हमें आजाद मत करना

यह कहते हो कि बातें तुम पुरानी याद मत करना,
मुझे मन्जूर है, तुम भी मगर बेदाद मत करना।
धुली है लक्स साबुनसे मलाईसे पली है यह,
मेरे मरनेपे तुम मिट्टी मेरी बरबाद मत करना।
लजाधुरसे भी नाजुक है यह मक्खनसे मुलायम है,
मेरे दिलको मुसीबत ढाके तुम फौलाद मत करना।
न आयेगी नजाकत लखनऊकी फिर तो बातोंमें,
मेरी सरकार तुम दफ्तर इलाहाबाद मत करना।
लगा कर दिल पढ़ाये जो नहीं उसकी पढ़ाई क्या,
किसी बेदिलको सुन लो तुम कभी उस्ताद मत कहना।
जहाँकी हैं जमीं सरसब्ज गंगाजीका पानी है,
उसे वीरान कर फारसका तुम बगदाद मत करना।
जलाते हैं, नया हर रोज हमपर जुल्म ढाते हैं,
सितम उसपर यह कहते हैं कि कुछ फरियाद मत करना।
मजा हमको कुछ ऐसा आ गया है कैदखानेका,
हमीं कहने लगे 'बेढब' हमें आजाद मत करना।

शेर अकबर

लगा करफ्यू, न बाहर लोग अब डरसे निकलते हैं,
न मैं घरसे निकलता हूँ न वह घरसे निकलते हैं।
चढ़ी आँखें लिये वह घूमते हैं हर तरफ ऐसे,
कि जैसे खाकसारोंके चढ़े फरसे निकलते हैं।
बड़े हैं आप इतने और बातें आपकी ऐसी,
तअज्जुब कुछ नहीं, घोघें समुन्दरसे निकलते हैं।
नहीं उजला है रँग अपना तो उजली क्यों मिले चीनी,
हमारे काम सारे सिर्फ शक्करसे निकलते हैं।
घड़ा, बोतल, सुराही, जाम, सब टूटे पड़े बिखरे,
बहुत मायूस मयखानेके वह दरसे निकलते हैं।
मेहरबानी नहीं जल्दीसे देवी-देवता करते,
समझते क्या नहीं, यह लोग पत्थरसे निकलते हैं।
समझकर पाँव रखना प्रेमकी गलियाँ नहीं सीधी,
बहुत मुश्किलसे इसके लोग चक्करसे निकलते हैं।
हुमायूँ सा मिला दिल और बाबरसी मिली हिम्मत,
जभी 'बेढब' मिली है शेर अकबरसे निकलते हैं।

काशीमें

चली आओ रहो अब तो मेरी सरकार काशीमें,
मजा इस पार लो, खाओ हवा उस पार काशीमें।
मनुसपलिटी यहाँकी सारी दुनियाँसे निराली है,
जिधर देखो उधर सड़कोंपे है कतवार काशीमें।
मिलेंगे भूत-प्रेतोंके चचा भी इस जगह सबको,
लगा आठो पहर शंकरका है दरबार काशीमें।
दबाकर दुम दबक जाते हैं छुपकर आज गलियोंमें,
चलाते थे सड़कपर जो कभी तलवार काशीमें।
यहाँ रेशमकी झीनी-झीनी साड़ी कौनसी कम थी,
नजर आने लगे अब मखमली सलवार काशीमें।
कभी मंडनका तोता बोलता था वेदकी बानी,
है अब भी शेर-भालू छापते अखबार काशीमें।
न पाओगे मजा काशीका दुनियाँमें कहीं 'बेढब',
अरे आओ यहीं पाओगे तुम संसार काशीमें।

बनविलावसे

मुमकिन नहीं कि दें वह तुम्हें कुछ झुकावसे,
मिलता है कुछ कभी तो हमेशा दबावसे।
तैयार मैं हूँ लेनेको लन्दनका माल भी,
बेचें जो मेरे हाथ तिलोचनके भावसे।
आनन्द उठाना हो तो छोड़ो क-ख-ग-घ,
उलफत जताओ खोलके दिल मीम-वावसे।
दो दो छँटाक खाके चलाते हैं काम वह,
जलपान सिर्फ करते थे जो चार पावसे।
बोलीं वह प्रेम आपसे करती तो मैं जरूर,
लगते हैं आप मुझको मगर बनविलावसे।
बंडाके बलपे उनसे तो मुमकिन नहीं है मेल,
शायद झुकें वह आपकी जानिब पुलावसे।
'बेढब' दवा करूँ जो कहीं एक चोट हो,
हैराँ हूँ आँख दिल व कलेजेके घावसे।

कमाने लगा हूँ मैं

जन्नत का कुछ मजा यहीं पाने लगा हूँ मैं,
उनके यहाँ कभी कभी जाने लगा हूँ मैं।
हर रोज मूँछ साफ कराने लगा हूँ मैं,
अपनेको फिर जवान बनाने लगा हूँ मैं।
सन्डेको जबसे आप बुलाने लगे मुझे,
हफ्तेमें एक रोज नहाने लगा हूँ मैं।
गानेका उनको शौक है, जबसे पता चला,
तबला खरीद करके बजाने लगा हूँ मैं।
चुङ्गीका हो गया हूँ मैं मेम्बर किसी तरह,
अब खूब सफाईसे कमाने लगा हूँ मैं।
आयीं हैं मेरे घरमें बड़ी आँख वह लिये,
अब दोस्तोंसे आँख बचाने लगा हूँ मैं।
दुनियामें मेरी जब न कहीं पूछ कुछ हुई,
टीचर बना हूँ और पढ़ाने लगा हूँ मैं।
उनका किसी तरहसे नहीं नाज उठ सका,
बोझा अब अपने सर पे उठाने लगा हूँ मैं।

हूर यहीं है

पंडित जी बताते हैं मुझे, स्वर्ग कहीं है,
मेरे लिए तो वह है जहाँ, स्वर्ग वहीं है।
वह कहते हैं फ़ुरसत नहीं है इन दिनों मुझको,
अफ़सोस मुझे बादमें छुट्टी भी नहीं है।
सुनता हूँ बहुत चुस्त है खुफ़िया पुलिस उनकी,
क्या वह वह बता देंगे मेरा दिल भी कहीं है।
बिल्लीकी तरह आँख दिखाते हैं वह मुझको,
चूहा वह समझ लें मुझे परवाह नहीं है।
कल शामको एक फ़िल्ममें सूरत नज़र आयी,
वाइजको पता ही नहीं है हूर यहीं है।
घर उनके पुकारा तो वह बाहर नहीं आये,
नौकरसे कहा देख लो 'बेढब' तो नहीं है।

सूई लगा रहा है

पच्छिम कोई तो कोई पूरबको जा रहा है,
हर एक अपनी-अपनी खिचड़ी पका रहा है।
साकीने पीने वालोंपर वह किया है जादू,
प्यालेमें कुछ नहीं है लेकिन पिला रहा है।
चूल्हा जले न हफ्तों चाहे किसीके घरमें,
हर एक जबां मुहब्बतमें दिल जला रहा है।
आया है खत मसूरीसे है लिखा यह उसमें,
गुरुकुलका ब्रह्मचारी होटल चला रहा है।
देशोंमें हो रहा है आरंभ प्रेम शायद,
बारूदका धुंआंसा उठता दिखा रहा है।
साड़ीकी गोटमें तनखाह लग गयी सब,
पैबन्द कोटमें अब दरजी लगा रहा है।
दिल प्रेममें फटा है, कहते हैं लोग टी० बी०,
सीनेको डाक्टर अब सूई लगा रहा है।
दुनियामें प्रेमका है सब ओर बोल बाला,
हर एक प्रेमका ही अब गीत गा रहा है।
चलती है तेज दुनिया, सब तेज चल रहे हैं,
है चाल प्रेममें भी, प्रियतम सिखा रहा है।
'बेढब' कहाँ मुहब्बतके दिन गये पुराने,
अब याद करके उनका दिल छटपटा रहा है।

बात बनाते

प्लेटोंपे प्लेट आयी उड़ाते चले गये,
हम पाँव धो रहे थे वह खाते चले गये।

हम दिलका दर्द उनको सुनाते चले गये,
वह प्रेमियोंके नाम गिनाते चले गये।

बरसातकी दावतमें उठे खाके लोग जब,
देखा कि कितने जूते व छाते चले गये।

उनसे कहा कि मुझपै भी हो जाय एक नजर,
हँसके मुझे अँगूठा दिखाते चले गये।

हैं देखनेमें हल्के तो वह फूलकी तरह,
पर हमको हर तरहसे दबाते चले गये।

'बेढब' उन्हें न कम किसी लीडरसे जानिये,
आये यहाँ वे बात बनाते चले गये।

मुहब्बतकी निशानी

उन्हें आज आयी है कैसी जवानी,
सभी कह रहे हैं उन्हींकी कहानी।
लचकदार कानून उनके नहीं हैं,
बनी है यह जेबी घड़ीकी कमानी।
नहीं दूध पीनेको मिलता अगर हो,
तो कलका तो मिलता है पीनेको पानी।
सभी कुछ निछावर किया उनपे मैंने,
उन्होंने जो तारीफ मेरी बखानी।
हुए छेद हैं फेफड़ेमें हजारों,
यही है मुहब्बतकी 'बेढब' निशानी।

तिकड़म

जिस तरह पहिया बिना है कामका टमटम नहीं,
तुम नहीं जब साथ मेरे चीज कुछ भी हम नहीं।

हुक्म है सरकारका हो बन्द ठर्रेका चलन,
बन्द होगी ब्रांडी, ह्विस्की, बियर या रम नहीं।

देखता हूँ उनके मुँहकी ओर जब मैं देर तक,
कहते हैं—चेहरा मेरा अखबारका कालम नहीं।

तान अब लेने लगे गदहे भी देखो दूनकी,
बन गये उस्तादजी हैं जानते सरगम नहीं।

पढ़के दरजा तीनतक वह बन गये साहित्यकार,
और मम्मटसे वह अपनेको समझते कम नहीं।

पत्ती पत्ती रो रही है सुबहको हर बागमें,
कौन दुनियामें जगह है जिस जगह मातम नहीं।

आप क्यों ललकारते हैं हार मैं हूँ मानता,
दालदा खाकर लदा है रोग, कुछ भी दम नहीं।

वाह क्या ईमान है चाहो जिधर झुक जाय वह,
जिस तरह कालर बना हो और हो बकरम नहीं।

क्यों किसी भी लाभकी उम्मीद 'बेढब' हो भला,
जानते कुछ आप दुनियामें अगर तिकड़म नहीं।

खैराती

न पानी बन्द होता है, न छाता है न बरसाती,
कमर तक जल सड़क पर है, वहाँ कश्ती नहीं जाती।
न लड़की हैं, न लड़के हैं, मगर है शौक लड़नेका,
शिखंडी आजकल बनने लगे अर्जुनके हैं नाती।
बहुत कुछ सोचकर जाता हूँ कहनेके लिये लेकिन,
जब आंखें चार होती हैं न मुँहमें बात है आती।
उन्होंने मरकहा एक साँड़ दरवाजेपे बाँधा है,
पहुँच पाऊँ न मैं इस वास्ते की है यह तैनाती।
कभी चितवनका खंजर है कभी है जाल बालोंका,
खुदा जाने मिटेंगे कब जहाँसे यह खुराफाती।
सनीचरसे अमंगल कर रहे थे जो अभी कल तक,
बधाई दे रहे हैं आज सुकरू औ जुमेराती।
सभाओं, मीटिंगोंमें, बैठकर दुनियाकी महिलाएँ,
यही कहती है 'अपनेको अगर मैं मर्द कर पाती'।
तुम्हारा प्रेम महँगा है नहीं मैं मोल ले सकता,
दुआ दूँगा अगर मिल जाय मुझको भीख खैराती।
फटी दीवार, छत टूटी, घिरे बादल, वह आये हैं,
यही है रामधुन मेरी कि मेरी जान बच जाती।
जो हैं आजाद वह तो हम भी हैं आजाद ए 'बेढब',
जरा देखेंगे हम भी कैसे अंग्रेजी नहीं जाती।

मिनिस्टरके साथ

करके वादा भी वह न आये थे,
मैंने बोरे यहाँ बिछाये थे।
उनके जलपानके लिये थोड़े,
आज मैंने चने भुनाये थे।
ऊँट भी भागने लगे सुनकर,
गीत ऐसे उन्होंने गाये थे।
पूछते हो कि रो रहे हो क्यों,
काले बादल उधर जो छाये थे।
कैसे पहचानते भला मुझको,
वह मिनिस्टरके साथ आये थे।
आज वह हो गये मेरे मालिक,
जिनसे जूते कभी सिलाये थे।
हो गया अस्पताल घर उनका,
कितने रोगी वहाँपे आये थे।
उनको भगवानका मिला दरजा,
सबकी आँखोंमें वह समाये थे।
सुबह तक रोशनी रही उनकी,
शामको मेरे घर वह आये थे।
मरते हैं तो बुरा नहीं 'बेढब',
मरनेको हम यहाँपर आये थे।

चपकपर चपक

जमानेकी हवाको देखकर जो हैं नहीं चलते,
गगनके पेड़ उनके बागमें हैं फूलते फलते।

नहीं रेलोंके डब्बोंमें अगर है रोशनी जलती,
तो घरसे लोग लेकर लालटेनें क्यों नहीं चलते।

वह दोमें एक होंगे, कवि बड़े या घोर प्रेमी हों,
शरीर ऐसा है जैसे लोग टी. बी. रोगमें गलते।

कोई मंत्री बना है, मंत्रिमंडलमें घुसा कोई,
नहीं तैसंस भी हमको मिला हम हाथ हैं मलते।

उधर दो सेरका गेहूँ व आधा पावका घी है,
इधर मेहमान ऐसे हैं कि कहनेसे नहीं टलते।

मेरा दिल भूनते हैं प्रेमकी वह आगमें ऐसे,
तवेपर जिस तरह आलूके चिप होटलमें हैं तलते।

चुगाता हूँ सवेरे शाम आँसूके उन्हें मोती,
इसीसे हंस मानसमें हमारे प्रेमके पलते।

दिलोंकी चोर बाजारी उन्होंने जिन्दगी भर की,
कभी इनको, कभी उनको, रहे बस वह सदा छलते।

लगादी रोक कलवरियापर अब सरकारने 'बेढब',
न आयेंगे वह दिन फिर जब चपकपर थे चषक ढलते।

नालीकी

जब नजर आती है सूरत किसी मतवालीकी,
भक्त बन करके मैं कहता हूँ कि जै कालीकी।

खूब आनन्द उठाता हूँ मैं मेम्बर बनकर,
मुझको लोगोंकी न परवाह है कुछ गालीकी।

रच रहे आप हैं साहित्य नया, क्या कहना,
गीतका रूप है धुन उसमें है कव्वालीकी।

टेककी राहपर उनकी नहीं बस चल सकता,
जिस तरह टेक कड़ी हो किसी हड़तालीकी।

प्लेट चीनीकी अगर हो तो बहुत इज्जत है,
पूछ कुछ भी नहीं चाँदीकी मगर थालीकी।

नर्कवालोंको भली खूब लगै वैतरनी,
देख लें शक्ल जो काशीकी कभी नालीकी।

मिल गया लिखनेको है खूब मसाला 'बेढब',
मुझको चिट्ठी जो मिली आज मेरी सालीकी।

सावनके महीनेमें

जो सच पूछो तो उनको ही मजा आता है जीनेमें,
जो हैं साड़ी पै करते खत्म जो पाते महीनेमें।
अरे पंडित यही तो भेद तुममे और मुझमें है,
तुम्हें आनन्द खानेमें मुझे आनन्द पीनेमें।
न खायी चोट आँखोंकी, सुधा भी पी न ओठोंकी,
हुआ बरबाद जीवन, मैं न मरनेमें न जीनेमें।
न जलकर बाद मरनेके भी वह ठंडा कभी होगा,
जला करता है जो इस जिन्दगी में रोज कीनेमें।
चमक कर वह गयीं बरसात में अपने पिताके घर,
गिरी बिजली हमारे घर पै सावनके महीनेमें।
धधकती जोरसे है पीके यह आँसूका पानी भी,
छिपी है कौनसी यह आग 'बेढब' मेरे सीनेमें।

चाल बेढब

रंग बिगड़े हैं चाल बेढब है,
अब पढ़ाईका हाल बेढब है।
हैं फिसलते निगाहके चप्पल,
उनके चेहरेकी खाल बेढब है।
'क्यों बुलाते हैं आप घर अपने',
उनका कैसा सवाल बेढब है।
मात गंगाकी बाढ़ हैं होती,
बन गयी आज दाल बेढब है।
कह दिया-है गुलाब तुम जैसा,
इससे उनको मलमाल बेढब है।
उनके आने पै फेल हो बिजली,
दिलमें मेरे खयाल बेढब है।
गले मिलते ही पर्स थी गायब,
उनमें कैसा कमाल बेढब है।
बापको है सिखा रहा बेटा,
तेज कैसी यह चाल बेढब है।

बातके तारमें फँसा हूँ मैं,
हवाका एक जाल बेढब है।
एक चांटा जमा दिया सिर पर,
और बोले कि ताल बेढब है।
खून पी-पीके जी रहा है वह,
हमको करता हलाल बेढब है।
दिलमें रखो तो बैठ जाता है,
बोझ उनका वबाल बेढब है।
बीस बरसोंसे कह रही है वह,
उम्र बस बीस साल बेढब है।
आज मुँह मत छिपाइये मुझसे,
मुट्ठियोंमें गुलाल बेढब है।

मरहम हैं

नया गल्लेका राशन है बनस्पति खा रहे हम हैं,
बतायें कौन कारण देशवासी आज बेदम हैं।

बड़ी है बेकली क्यों फूलसे मुरझा रहे हम हैं,
मिलेंगे फल तनिक ठहरो लगे कुछ पेड़ क्या कम हैं।

मेरी बातों को सुनकर वह मरम्मत बेतरह करते,
मगर है खैरियत वह जानते हिंदी बहुत कम हैं।

बहुत कोशिश उन्होंनेकी मियां वह बन नहीं पाये,
इसीसे मस्त होकर घूमते वह रोज बे गम हैं।

करैला हैं, न हैं लौआ, कबूतर हैं, न है कौआ,
समझते हैं मगर दुनियाँमें जो कुछ हैं हमीं हम हैं।

न करते काम कुछ हों किंतु हैं वह देशके सेवक,
छपाते नित्य वह संदेश तो दो चार कालम हैं।

हमारी बाँहमें भी शक्ति है अर्जुनके बाँहोंकी,
सबेरे आध घंटा खेलते हम रोज कैरम हैं।

हमारे देशके नेता सभी हैं इस समय लकड़ी,
बहुतसे चीड़ है, कुछ आम हैं दो एक शीशम हैं।

सनीचरकी सुना है है लगी कश्मीरपर आँखें,
नहीं क्या देशकी खानोंमें मिलते आज नीलम है।

वह दिलमें आग लेकर बोलते हैं, बोलते हैं जब,
नहीं वह आदमी हैं मैं समझता हूँ कि चीलम हैं।
उन्होंने इस तरह देखा, , तुरत मर हम गये होते,
मगर मैंने तो यह देखा कि 'बेढब' वह तो मरहम हैं।

तंदूर से

दूर रहिये बाज आया आपके इस नूर से,
रखके दाढ़ी बन गये हैं आप तो लंगूरसे।
आप दाढ़ीपर फ़िदा हैं, लोग मुड़वाते हैं मूँछ,
साफ चेहरा करके बनजाते हैं अब वह हूरसे।
जानता हूँ आप भारतके बड़े ही मित्र हैं,
आपसे डरता हूँ मिलिये आप मुझसे दूरसे।
बात कुछ सुनते नहीं, डर है न गिर जाये कहीं,
लड़खड़ाते जा रहे हैं, वह नशेमें चूरसे।
जबसे वह नेता हुए चेहरा है फूला इस तरह,
रोटियाँ निकली हों ताजा जिस तरह तंदूरसे।

पूस आता है

बलासे अमरिका आता है अथवा रूस आता है,
हमें जाड़ेका कपड़ा चाहिये अब पूस आता है।

बहुत ओढ़े दुशाले आज तक कश्मीरके हमने,
मगर अब देखना होगा कहाँसे तूस आता है।

न गेहूँ, जौ, चना राशनकी दूकानोंसे है मिलता,
कभी कुछ घास आती है कभी कुछ फूस आता है।

पुलिससे मिल गयी पेन्शन, नया अब काम है उसका,
बहुत कुछ रेलके डब्बोंसे जाकर मूस आता है।

समझते हैं वह, सब सम्मान करते हैं बहुत मेरा,
मगर दुनियाँ समझती है कि यह मनहूस आता है।

गया था बम्बई इस धुनमें नरगिस पाँव दाबेगी,
मगर वह लात खाकर लौटकर मायूस आता है।

जो सेरों पूरियाँ खाकर मलाई सेरभर खाते,
उन्हें दो-चार चम्मच मूँगका अब जूस आता है।

न घबराता कभी हूँ—शेर, भालू और चीतेसे,
दहल जाता है दिल जब सामने कंजूस आता है।

जमानेने बड़ाईकी बदल दी आज परिभाषा,
बड़ा 'बेढब' वही जो खूब खाकर घूस आता है।

कुँआरमें

इस उम्रमें लगे हुए हैं वह सिंगारमें,
फागुन बुला रहे हैं वह देखो कुँआरमें।

अच्छीसी कार हो तो तुम्हें साथ ले चलें,
लगता है शाक जोरका इस जीप कारमें।

सीधी हुई न आँख तनिक उनकी आजतक।
उलटा यहाँपे टाट है उनके दुलारमें।

कुछ चाटनेकी चीज वहाँपर जरूर है,
हैं घुस रहे जो लोग असेम्बलीके द्वारमें।

बीमार होनेपर ही वह आते हैं देखने,
मैं तो पड़ा रहूँगा हमेशा बुखारमें।

करनी अगर हैं नीच तो तुम नीच हो सदा,
मैदानमें रहो कि रहो तुम पठारमें।

देखो उधर समझके अलकका यह जाल है,
निकलोगे फिर नहीं जो फँसे इस सिवारमें।

लड़नेमें साथ उनके ही आता है बस मजा,
जीते अगर तो मौज है, आनंद हारमें।

काशीकी धूलने तुम्हें 'बेढब' बना दिया,
शंकरका है भभूत यहाँके गुबारमें।

शमाके साथ परवाने

निराले ढंगसे वह छिपके मेरे दिलमें रहते हैं,
कि जैसे रोशनीमें दिनकी चूहे बिलमें रहते हैं।

तअज्जुब कुछ नहीं होता गला जब रेतते हैं वह,
सुबहसे शामतक जब देखिये 'फाइल'-में रहते हैं।

उड़ाते खूब गुलछर्रे हैं हम पहलीसे पन्द्रह तक,
न पूछो आखिरी हफ्ते में किस मुशकिलमें रहते हैं।

जो नेता हैं तो उनके साथ हैं दस-बीस दरबारी,
शमाके साथ परवाने सदा महफिलमें रहते हैं।

न ठहरे, छोड़कर गिरजाको भागे हजरते ईसा,
बड़े आरामसे वह आजकल बाइबिलमें रहते हैं।

न पाया हो किसीने पालिया भगवानको मैंने,
वह हर सिनेमा भवनकी ऊपरी मंजिलमें रहते हैं।

सितारे जिस जगह सिनेमाके सेंटर हैं बने रहते,
वहीं पर घूमते वह रात दिन सरकिलमें रहते हैं।

बहुतसे लोग कहते हैं कि नीची बुद्धि है उनकी,
जो गरमीके दिनोंमें प्लेनसे जा हिलमें रहते हैं।

इसीको जिंदगीका हम मजा कहते हैं ए 'बेढब',
कभी दरियामें रहते हैं कभी साहिलमें रहते हैं।

इज्जत बढ़ादीं

नहीं पास मेरे रहे अब इलाके,
भला तुमको रखूँगा कैसे जिलाके।
तुम्हारी जमानेमें इज्जत बढ़ा दी,
तुम्हें घूमकर वोट मैंने दिलाके।
बसाने चले हैं नयी एक दुनियाँ,
वह मिट्टीमें दुनियाँ पुरानी मिलाके।
न तैयार थे बात वह माननेको,
मनाया उन्हें मैंने ह्विस्की पिलाके।
नहीं है कमेटी नहीं है वह जलसा,
विदाई न हो जिसमें दावत खिलाके।
सरल है, बड़ा आदमी आज बनना,
पहन लो जरा सूट बढ़िया सिलाके।
'नहीं' कह रहे हैं, कि 'हाँ' कह रहे हैं,
दिये मुसकरा सिर वह अपना हिलाके।

प्रेममें टी. बी.

पेच खाए हुए जो सिर पे है, बाल अच्छा है,
हम गरीबोंको फँसानेका यह जाल अच्छा है।
पढ़के क्या होगा, पढ़ेंगे नहीं, नेता होंगे,
नौजवानोंका यह ऊँचा सा खयाल अच्छा है।
इस नये युगमें नयी हमने बनाई हिन्दी,
भात कहते हैं कि अच्छी है, व दाल अच्छा है।
उनकी तनखाह महीनेमें है दो सौ रुपये,
बंकमें लाखका टोटल है कमाल अच्छा है।
मुझको तो प्रेममें टी० बी० हुई परवाह नहीं,
आप योहीं जो घुलें कौन सा हाल अच्छा है।
ख़त यह आया है वह आयेंगे मिलेंगे मुझसे,
ज्योतिषीने भी कहा है कि यह साल अच्छा है।
ब्लाउजकी भाँति लगे शर्ट पहनने लड़के,
लोग कहते हैं कि 'बेढब' यह जमाल अच्छा है।

निशानी नहीं है

मेरे पास उनकी निशानी नहीं है,
तभी जिन्दगीमें रवानी नहीं है।
अजब होरही है घड़ी जिन्दगीकी,
चलानेकी कोई कमानी नहीं है।
हँसे सुनके मेरी मुहब्बतकी बातें,
कहा इससे सुन्दर कहानी नहीं है।
रहा एक दिल दे दिया वह भी मैंने,
न कहना कि दुनियाँमें दानी नहीं है।
लगे मुझसे ईमानकी बात करने,
और इस पर भी कहते हैं छानी नहीं है।
इधर देखो जब, बंद एक आँख करलो,
कभी तुमने बन्दूक तानी नहीं है।
वह लट्टू समझकर नचाते हैं मुझको,
लड़कपन है उनका जवानी नहीं है।
बनी कामरेडा पहन लाल कपड़े,
वह साड़ी तरहदार धानी नहीं है।

वहाँ पर मिली चाय, काफी, बराँडी,
मगर एक चिल्लू भी पानी नहीं है।
मुहब्बतकी बातें लिखी खतमें उनको,
मेरा प्रेम 'बेढब' जवानी नहीं है?

साहित्य-सेवा

जमानेसे अलग हैं वह न उनका कोई सानी है,
हजारों सालकी तसवीर यह जैसे पुरानी है।
मिला जो प्रेमका उपहार उसको वह न भूलेंगे,
पड़ा जो कानपर चप्पल अभी उसकी निशानी है।
बिना डर आगसे खेले, जले फिर जलके फिर खेले,
इसीका नाम दिलवालोंकी भाषामें जवानी है।
फुलाकर मुँह जो बैठे हैं नहीं कुछ बोलते सुनते,
अजब ठंडी लड़ाई आपने मुझसे यह ठानी है।
कटिंग है पेपरोंकी चिट्ठियाँ कुछ हैं तकाजोंकी,
यही साहित्य सेवाकी बची 'बेढब' निशानी है।

शरबते दीदार

बड़ा है वह जमानेमें जिसे घर-बार काफी है,
जिसे है पास-बुक या पासमें कलदार काफी है।
नहीं कुछ और इच्छा, देख लो मीठी निगाहोंसे,
न लाओ चाय मुझको शरबते दीदार काफी है।
उसे भिजवाइये मत जेल, वह है प्रेमका पागल,
अभी उस दिन सड़कपर जो पड़ी वह मार काफी है।
नहीं संतोष दुनियाँसे चले वह चाँदको लेने,
रहो तुम सामने, मुझको यही संसार काफी है।
मुझे चेक और नोटोंकी नहीं है चाह दुनियाँमें,
छपा हो नाम जिसमें बस वही अखबार काफी है।
प्रवालोंसे तुम्हारे लाल होठोंमें जो है टानिक,
इसीका रस हमारे वास्ते उपचार काफी है।
जिसे चाहें समय दें आप जितना आप हैं मालिक,
मुझे जब आप खाली हों मिनट दो-चार काफी है।
नहीं मालूम मुझको, लोग क्यों हैं आपसे मिलते,
मुझे तो देख लेना आपका सरकार काफी है।
हैं उनके पास नाखुन, दाँत है, चप्पल है पाँवोंमें,
किसीको पस्त करनेके लिये हथियार काफी है।
भला किस्मत कहाँ इनकी बगलमें आपके बैठें,
बना लेते अगर 'बेढब' को चौकीदार काफी है।

सितम

सितम यह आप हम पर ढा रहे हैं,
अभी आये अभी फिर जा रहे हैं।

उधर काले जो बादल छा रहे हैं,
मेरी आँखोंसे मेंह बरसा रहे हैं।

किये वादों पै वादे जा रहे हैं,
मुझे क्यों आप यों बहका रहे हैं।

वह तबला इसको समझे जा रहे हैं,
हम अपनी खोपड़ी सहला रहे हैं।

हमारी बात भी सुन लीजिये कुछ,
सुनूँगा आप जो फरमा रहे हैं।

ललाई आ रही है उनके मुँह पर,
मलाई आजकल वह खा रहे हैं।

चुराया है हमारा दिल उन्होंने,
इसीसे दिलमें वह शरमा रहे हैं।

घटा है आसमांमें आज जबसे,
बढ़ा है दर्द वह तड़पा रहे हैं।

जनानी आगयी है आदतें कुछ,
मुड़ाकर मूँछ वह शरमा रहे हैं।

मिलाया पूरबो पच्छिम उन्होंने,
मटनके साथ बैंगन खा रहे हैं।
नहीं आता निशाना भी लगाने,
वह तिरछा तीर ताने आ रहे हैं।
चुराया तो हमारा दिल उन्होंने,
मगर वह दिलमें अब पछता रहे हैं।
गधे भी रेंक कर भागे वहाँसे,
वह गाना क्लासिकल जो गा रहे हैं।
जगह कोई न अच्छी और होगी,
हम आँखोंमें उन्हें टहला रहे हैं।
बड़े इंजीनियर हैं आप बनते,
यह टूटा दिल न जोड़े पा रहे हैं।
चले हैं सैर करने फूलकी हम,
चुभे पर दिलमें कांटे जा रहे हैं।
बटर है, टोस्ट है, है आमलेट भी,
कलेजा आप क्यों फिर खा रहे हैं।
वह हाकीसे सदा रहते हैं टेढ़े,
हमें शायद वह सीधा पा रहे हैं।

हजारों वोल्टेजकी उनमें ताकत,
जरा सा छू दिया तड़पा रहे हैं।
चलो छिप जांय, भागें घरके अन्दर,
वह चन्दा मांगने ही आ रहे हैं।
करेंगे घर हमारा वह उजाला,
न बिजली हम इसीसे ला रहे हैं,
लगायी है लिपिस्टिक आपने, या,
किसीका खून पीकर आ रहे हैं।
न आये हैं, न आयेंगे वह 'बेढब',
मगर हम हैं कि धोखा खा रहे हैं।

बँगलेपर आज उनके बहुत टीमटाम है,
'एकशा' कहीं खुला है कहीं 'ओल्ड टाम' है।
डरते हुए जो जाके किया मैंनेभी सलाम,
बोले निकाल दो कि यह नेटिव गुलाम हैं।

आप कहते हैं, स्वदेशी 'थिंग' हो,
राज अपना और अपना 'किंग' हो।
कुछ दिनोंमें आपको होगी यह मांग,
'चर्च'-के स्थानपर शिवलिंग हो।

बढ़ती जाती है रोज आपकी माँग,
दल स्वदेशीका है बहुत 'स्ट्रांग'।
जब यही हाल है तो कहियेगा,
छोड़ ह्विस्कीको लाट छानैं भाँग।

बाहर सभामें देखिये खद्दरका ठाट है,
घरमें मगर विलायती सब ठाट बाट है।
मिलते हैं चुपके चुपके गवर्नरसे लाटसे,
लेक्चरमें मुँह-पे रहता सदा 'बायकाट' है।

भरा है झुर्रियोंसे मुँह गोया लतरी पुरानी है,
कमर टेढ़ी, नहीं हैं दाँत, पर दिलमें रवानी है।
करेंगे ब्याह बच्ची दूध पीतीभी जो मिल जाये,
यही भारतके बूढ़ोंमें नयी बेढब जवानी है।

चरौनी है तुम्हारी गोखरूका या कि कांटा है,
गिरे मक्खनके ढोंके या लगाया तुमने चांटा है।
न जाने कौन 'बेढब' काट खाता है मेरे दिलमें,
तुम्हारी याद है या घुसके बैठा कोई माटा है।

वह 'इंगलिश गर्ल' क्वांरी है अभी पर 'एज' थट्टी है,
बड़ी है भीड़ घरपर, घर है या काशीकी सट्टी है।
ढला है जिस्म उसका खुशनुमा सांचेमें ए 'बेढब',
खुदाके कारखानेकी नयी साबुनकी बट्टी है।

खद्दरको छोड़ उनका प्यारा बना है 'मसलिन',
कपड़ा बदनमें देशी गड़ता है जैसे हो 'पिन'।
मिहनतसे काम करना अपना नहीं सुहाता,
दफ्तरमें क्लर्क बनकर बैठे करेंगे भिनभिन।

निगाहें पेग है ह्विस्कीकी 'कलर' भी जैसे 'जसमिन' है,
बलाकी शोख, बी. ए. पास, उस पर 'एज' कमसिन है।
अगर देखें इसे योगी तो निश्चय ही फिसल जायें,
जो मेरा आगया दिल इसमें बेढब कौनसा 'सिन' है।

बहुत डर है कहीं दिलमें न कोई दर्द पैदा हो,
बिना सरजनसे पूछे कैसे उनपर कोई शैदा हो।
जरा 'हेल्थ-आफिसर' देखा करें 'शीरी लबों' को भी,
कहीं उनकी मिठाईमें न कोई 'जर्म' रहता हो।

क्रिश्चियन मिस 'ब्लैक' पर मगरूर है,
बाबुओंके वास्ते वह हूर है।
दाग चेचकके जो हैं रुखसारपर,
चेहरा गोया 'खानये जंबुर' है।

मुद्दत गुजरी दोस्तोंसे बातमें,
शामको टेनिस सिनेमा रातमें।
दिनको कालेजमें सिसेज 'बेढब' रहीं,
रह गये वह यों ही मुतफरकातमें।

उम्र गुजरी इस कदर कब अक्ल तुमको आयेगी,
चापलूसी कर चलो इज्जत यही दिलवायेगी।
ईश्वरके डरसे 'बेढब' है तुम्हें क्या फायदा,
तुम डरो हेडमास्टरसे कुछ तो 'पे' बढ़ जायेगी।

'लव' मेरा उनके लिये एक 'लोड' है,
आँख उनकी मेरा 'पीनल कोड' है।
दिलमें भर रखा है तुमने क्यों 'गुबार',
वह भी क्या काशीकी कोई 'रोड' है।

लिखके चिट्ठी उनसे 'ग्रीटिंग' कीजिये,
जब चलें स्कूल 'मीटिंग' कीजिये।
बाप उनके उनसे जो मिलने न दें,
उनके घरपर जाके 'पिकेटिंग' कीजिये।

इन हसीनोंका अजब 'स्टेट' है,
दिल लगाये जो वह मटिया मेट है।
कितनी तसवीरें खिचीं औ मिट गयीं,
उनका दिल है या कोई स्लेट है।

मेरा दिल अपने बालोंके 'प्रिजन' में 'लाक' करते हो,
अगर मैं माँगता हूँ हँसके हमको 'माफ़' करते हो।
यह कहते हो कि अब छूटेगा फिर ऊधम मचायेगा,
भला यह कौन सी 'जस्टिस' है जिसकी 'टाक' करते हो।

'सोशलिस्टों' को नहीं है जिस तरह राजा पसंद,
जिस तरह बिस्कुटके आगे है नहीं खाजा पसंद।
'टेस्ट' में उनके भी सुनता हूँ हुआ है 'चेंज' अब,
आजकल अल्लामियांको है नहीं बाजा पसंद।

जिस जगह वह हों खड़े बस भीड़ उस 'स्पाट' है,
दिल नक़द लेकर नहीं कुछ बोलते क्या ठाट है।
'साल्ट' युक्त कपोल, मीठे होंठ, तुरशी आँखकी,
यारका चेहरा नहीं है, आगरेकी चाट है।

बाप जां तो साग खा मर गये,
पर हमारे वास्ते कुछ धर गये।
मूँछ मुड़वाकर पहनकर सूट-बूट।
नाम हमभी मिस्टरोंमें कर गये।

निरक्षर थीं वह पहले आजकल कालेजमें जाती हैं,
बनाती रोटियाँ थीं, 'फ़ारम्यूला' अब लगाती हैं।
लगाती थीं कभी उबटन, वह रोज अब 'सोप' हैं घिसती,
अगर बैंगन थीं पहले आजकल वह नाशपाती हैं।

जिससे बँगले पर मिलें साहब वही इंसान है,
जो न इंगलिश सूट पहने वह निरा हैवान है।
पूछ लो साहबसे 'बेढब' सांसभी लेना जो हो,
'प्रेट' बननेकी यही तरकीब एक आसान है।

अपनी 'ब्यूटी' के नशेमें बेतरह वह चूर हैं,
यह समझते हैं कि हम जन्नतकी कोई हूर हैं।
जर्द चेहरा है बहुत 'बेढब' मुँहासोंसे भरा,
हम यह कहते हैं कि वह लँवईके मोतीचूर हैं।

हुकूमत आपकी हिंदोस्तांमें सबको प्यारी है,
शिकायत कुछ नहीं है एक बस विनती हमारी है।
लगायें आँखपर भी फौजदारी का कोई 'सेकशन',
यह 'बेढब' 'मरडरर' हैं 'डेन्जर' भी इनसे भारी है।

घरके बाहर 'प्रेट' हैं हम 'बास' हैं,
शान है बीबीभी बी. ए. पास हैं।
घरके भीतर हाल क्या बेढब कहूँ,
लात है, बीबी है, हम हैं, सास हैं।

'रेस' में लबके हमारी 'हेल्थ'-भी अब 'हाफ' है,
मूँछका क्या हाल लिखूँ क्लीपड़ीभी साफ है।
देखता हूँ जब उन्हें तब दिलमें होता है 'ट्रेमर',
प्रेममें उनके हमारा 'हार्ट' 'सिसमोग्राफ' है।

हे प्रिये 'टॅपर' तुम्हारा 'हाट' है,
दिलमें क्यों मेरी तरफसे 'नाट' है।
क्यों जलाती हो हमारे दिलका घर,
तुम मुसलमां हो न यह कोहाट है।

आप 'फ्रीडम'—का गीत गाते हैं,
पर कुछ इसका पता लगाते हैं।
आप खाते हैं साग बथुआका,
वह 'चिकेन' और 'गोट' खाते हैं।

क्या कहूँ किससे कहूँ क्या हो गया,
क्या मिलेगा अब वह 'बेढब' जो गया।
कोई जाकर होम-मेम्बर से कहो,
इस बनारसमें मेरा दिल खो गया।

गलियोंमें घूमता है घर घरसे बापसी है,
बूटे हैं दाग दिलके रंगतसे बेकसी है।
रेंजे हुए जिगरके है तार तार टूटा,
प्रेमीकी जिन्दगीभी साड़ी बनारसी है।

आँख नश्तर है तुम्हारी, होठ 'आइंटमिंट' है,
'ब्लैक' तिल पिल है, पसीना 'प्योर' पीपरमिंट है।
डाक्टरके डाक्टर हो, साथ मेडिकल हाल है,
यह तो बोलो कुछ तुम्हारी फीसकी भी 'हिट' है।

हम ब्लैक हैं बलासे व तुम 'व्हाइट' ही सही,
आओगे मेरे घरमें तो कुछ 'लाइट' ही सही।
कुछ छेड़ छाड़ चलती रहे तुमसे व मुझसे,
बोलो जरूर 'लव' न सही 'फाइट' ही सही।

लोग कहते हैं तुम तमाशा हो,
प्रेमियोंके हृदयकी आशा हो।
मीठी छोटी सफेद चिकनी से,
मैं तो कहता हूँ तुम तमाशा हो।

श्रीमतीजी गल्प लिखने लग गयीं,
खोजमें 'कैरेक्टरों'-के पग गयीं।
कल जो लौटे घूम कर श्रीमानजी,
घरसे देखा श्रीमतीजी भग गयीं।

मेरे हाथों कुछ नहीं तो पानही खाया करो;
मुँह लगो इतना न सबसे कुछ तो शरमाया करो।
थोड़ी जो छुट्टी मिले 'संडे'-को आ जाना जरा,
कौन कहता है कि घरपर रोज तुम आया करो।

दिल मेरा टूट गया प्रेमके झकझोरोंसे,
गैर मुमकिन है बचाना उसे अब चोरों से।
उनसे कहिये तो दिलाते हैं वह आँखें मुझको,
चैन दुनियामें मिलेगी न कभी गोरोंसे।

शक्ल यह मिसकी है रोशन या कि 'किटसन' लंप है,
चालकी अठखेलियाँ हैं या वह करती 'जंप' है।
जब वह चलती है तो दिल क्या काँप जाती है जमीन,
मिस हैं यह या जनवरी चौंतीसका भूकम्प है।

एक दिन मुझसे मेरा हज्जाम यों कहने लगा,
आप सब बातोंमें मेरी कहते हैं क्यों 'हाँ' सदा।
मैंने उससे कह दिया आसान है इसका जवाब,
है मेरी कमजोर गरदन पर तुम्हारा उस्तरा।

उन्हें दुनिया से क्या मतलब मिनिस्टरके जो बंदे हैं,
कहीं वह आगये तो पार्टी औ खूब चंदे हैं।
किसी स्कूल विद्यालय का 'डिपुटेशन' जो ले जाओ,
तो कहते हैं कि भाई आजकल व्यापार मंदे हैं।

रुपये मिलें तो कुछ नहीं दुनियाँमें पाप है,
लड़कीके 'सेल' के लिए तैयार बाप है।
जीते हों मरते हों जो बस एक धन के वास्ते,
बेकार उनके सामने सारा विलाप है।

देश सेवा करनी हो खद्दर का कपड़ा बेचिये,
हो कमाना धन अगर योरपमें चमड़ा बेचिये।
बेचिये कपड़े विदेशी लूटना हो देशको,
पासहों एम. ए. अगर तो आप खपड़ा बेचिये।

वादोंका तुम्हारे मुझे विश्वास नहीं है,
क्या 'वेट' करें कोई मुझे आस नहीं है।
कहिये तो कोई 'आरटिकिल' आपपे लिख दें,
कुछ इसके सिवा और मेरे पास नहीं है।

हो बनारस देखना तो नवपटैया देखिये,
रामलीला देखनी हो नककटैया देखिये।
देखनी हो शान भारतकी औ इंगलिस्तानकी,
कौंच वायसरायकी मेरी चटैया देखिये।

जिधर देखो उधर ही चंदा है,
बड़ा हैरान इससे बंदा है।
जिधर जाओ उधर खुरचते हैं,
यह सोसाइटी नहीं है, रंदा है।

जमानेको लगे यह बात अच्छी या लगे भद्दी,
जिसे है प्रेम सच्चा सारी दुनियां है उसे भद्दी।
लिखेंगे सोनेके हर्फोंमें लिखनेवाले 'हिस्ट्री' के,
मिसेज सिमसनके 'लव'में छोड़ दी 'एडवर्ड'ने गद्दी।

यह खबर जब से छपी काशीके दैनिक 'आज'-में,
लाटसाहबकी बड़ी श्रद्धा है बुल महाराजमें।
सांड़ काशीके बहुत खुश होगये यह जानकर,
कद्र होगी अब हमारी 'वाइसरीगल लाज' में।

हैं जो आँखें उनकी इंजन दिल हमारा रेल है,
खींचते जाते हैं हमको क्या ही 'बेढब' खेल है।
जब मैं कहता हूँ करो आजाद तब कहते हैं वह,
है 'तेरा' 'आफेंस' 'लव' का जो 'विदाउट-बेल' है।

एम ए. हुआ तो समझा कि मैं 'ग्रेट' होगया,
'ला' पास करके और अजब 'फेट' होगया।
घर घरकी खाक छानके बी. टी. किया जो पास,
सुनते हैं 'साठ' बीटियों का रेट होगया।

चंदोंसे खाली जब मेरा पाकेट होगया,
बंदा भी आनरेरी मजिष्ट्रेट होगया।
लेकरके कर्ज 'कार' मंगायी सिलाये सूट,
नीलाम मेरे घरका हर एक 'प्लेट' होगया।
देशमें केवल दलोंकी 'यील्ड' है,
इनसे बचनेकी न कोई 'शील्ड' है।
लड़ पड़े गांधीसे जिन्ना जोरसे,
और भारत एक 'बैटिल फील्ड' है।
तुम चाहती हो 'पौंड' यहां एकही 'पेंस' है,
मिल-मिलके बिगड़ जातीहो यह कौनसा सेंस है।
मिलना हो तो आओ, जो न मिलना हो तो कह दो,
क्या यह भी कोई 'यूनिटी'-की 'कानफरेंस' है।

कोई गोरा है कोई काला है,
भेद किसने यह लाके डाला है।
एकसा सबसे क्यों नहीं मिलते,
कैसी 'जसटिस' है, कौनसा 'ला' है।
उनके घर मेरी नहीं अब 'रीच' है,
'राइवलों' की रासतेमें कींच है।
जब बिगड़ती हैं वह मुझपर जोरसे,
मैं समझता हूँ 'बजट स्पीच' है।
रूस जापानमें मचैगा युद्ध,
खूब जूझेंगे अब लेनिन औ बुद्ध।
देखना है चपेटता है कौन,
राजवादी कि साम्यवादी शुद्ध।

मिलके आपसमें एक हो जाओ,
'लव' के चूल्हेमें 'बेक' हो जाओ।
देर यदि हो स्वराज मिलनेमें,
हिंदुओं झटसे शेख हो जाओ।

काश्तकारीका मजा है खेत, जब जरखेज हो,
है मजा खानेका जब कांटा छुरी औ मेज हो।
कौनसी मुश्किल है दुनियामें जो फिर आसां नहीं,
'फादर-इन-ला' आपका 'बेढब' अगर अंगरेज हो।

शेर

आज तक बनवा न पाया 'होल' घरके 'रूफ'—का,
कर्ज से लेकिन चुकाया दाम 'वाटर प्रूफ' का।

क्यों बनारसमें न अब तारीफ 'मिस्टर लिंच' हो,
जब जमी सड़कोंपे 'बेढब' गर्द दो दो इंच हो।

नयी तालीमका 'बेढब' यही निकला नतीजा है,
चचा के सामने लेडी लिये लेटा भतीजा है।

हेल्थ चाहो बैठकरके टिनके 'टब'—में 'बाथ' लो,
नौकरी चाहो अगर एक मिसको अपने साथ लो।

लगा 'चेस्टर' पहनने ओढ़ने वाला रजाईका,
बनाता 'सैंडविच' है आज लड़का नानबाईका।

डिगरियां हैं पास बेढब फिर भी 'सरविस' दूर है,
बे पढ़ा मुझसे कहीं अच्छा है जो मजदूर है।

इस कदर नकशा जमा खद्दरकी गांधी कैपका,
रंग बदला चाहता है इंडियाके मैप'—का।

जलाते हैं हमारे दिलको वह, कैसा यह नाटक है,
समझते हैं मेरा दिलभी कोई हनुमान फाटक है।

बीबीसे डर हो खिड़कीमें जाली लगाइये,
साहब को 'प्लीज' करना हो डाली लगाइये।

हमारी प्रेमिकाकी देखने में उम्र छोटी है,
मगर लड़ती है ऐसे वह गोया कैरम की गोटी है।
मेरा दिल उनके 'रोजी' 'फेस' पर इस तरह लट्टू है,
कि जैसे इमतिहांमें नोट बुक पर कोई रट्टू है।
खाकभी जिस जमींकी पारस है,
शहर मशहूर यह बनारस है।
जिंदगीभर रह गये प्यासे तुम्हारी चाहपर,
हो भला अब भी कुछ देदो खुदाकी राहपर।
जहांपर सर्ज चलता है वहाँ पट्टू नहीं चलता,
मिसोंको चाहिये मोटर वहाँ टट्टू नहीं चलता।
अजब बेढब है नाज उनका यह शोखी भी निराली है,
नचाकर आंख कहते हैं यह कि 'राइफिल' दो नाली है।
वस्लकी भी रात कैसी रात है,
मैं हूँ, बिस्तर है, व उनकी लात है।

कुछ आवश्यक टिप्पणियाँ

पृष्ठ १

ओविड लैटिन भाषाका महान कवि। उसकी एक पुस्तक है जिसका अर्थ है प्रेम करने की कला।

पृष्ठ २

पीरे मुगां—शराब पीनेवाले सिद्ध।

पृष्ठ ४

बाम—कोठा। जानबुल—अंग्रेज लोग के लिये जाति वाचक नाम अर्थात् अंग्रेज। पाम—बिना फल फूल के ताड़ ऐसे पेड़ जो आजकल गमलोंमें बंगलों में लगाये जाते हैं।

पृष्ठ ६

आदमज़ाद—मनुष्य। न्यूटम—एक अंग्रेजी वैज्ञानिक जिसने बहुत से आविष्कार किये थे जिसमें पृथ्वीकी आकर्षण शक्ति एक है। एडिसन—एक अमेरिकन वैज्ञानिक, इसनेभी सैकड़ों आविष्कार किये; जैसे ग्रामोफोन, बिजली के लाइट इत्यादि।

पृष्ठ ७

केको-सूप-केक एक प्रकारकी अंग्रेजी मिठाई। सूप—रसा, शोरवा।

पृष्ठ ६

खारे मुरीलां—बबूलका कांटा। रक्सां हांगे—नाचेंगे। हूर जन्नतमें मिलेंगी—मुसलमानोंका विश्वास है कि मृत्युके बाद स्वर्गमें सुन्दर स्त्रियां मिलेंगी; उन्हीं स्त्रियों को हूर कहते हैं। मदरटंग—मातृभाषा। क्रेडिट—उधार।

पृष्ठ १०

जिस समय वाल्डविन साहबने इस्तीफा दिया था और रामजे मैकडानल्डने मजूरदलका शासन इङ्गलैंडमें प्रारम्भ किया था तब लिखा गया था।

पृष्ठ ११

पारकर—पारकर कलम।

पृष्ठ १४

बाब्ड बाल—गरदन तकके कटेहुए स्त्रियोंके बाल। होल्ड आल—कपड़ेकी वह खोली जिसमें बिस्तरा इत्यादि रखकर बांध दिया जाता है रेल सफरके समय।

पृष्ठ १७

मिसमेयो—एक अमेरिकन स्त्री जिसमें 'मदर-इंडिया' नामकी एक पुस्तक भारतीयों को बदनाम करने के लिए लिखी

थी। उसमें भारतीयोंके संबंधमें वाहियात और ऊटपांग बातें लिखी हैं।

पृष्ठ १८

डारविन—अंग्रेज वैज्ञानिक जिसके सिद्धांतके अनुसार किसी समय मनुष्योंके पूर्वज बंदर थे।

पृष्ठ २२

कहगिल—फारसी शब्द है, भीतपर जो मिट्टी का गारा लगता है उसे कहगिल कहते हैं।

पृष्ठ ३५

वेनिस नगरकी सड़कें और गलियां पानी-पानी हैं। लोग एक स्थानसे दूसरेको नावोंपर जाते हैं। काइसेंथिमम—गुल दाऊदीका अंग्रेजीनाम।

पृष्ठ ३८

प्रोपोज—विवाहका प्रस्ताव।

पृष्ठ ४४

शरारा—चिनगारी।

पृष्ठ ४५

डायर—पंजाबकी फ़ौजका एक जनरल जिसने सन् १९१९

जलियांवाला बाग़में गोलियां चलवायी थीं। आमलेट अंडेका बना हुआ एक खाद्य पदार्थ।

पृष्ठ ५०

अलस्टर...में-अलस्टर आयरलैंडका एक प्रांत है। सारा आयरलैंड स्वतंत्र राज है मगर अलस्टरका प्रांत अलग है और इंगलैंडवालोंकी ओर है। उसका शासन भी अलग है। सहारा—दो अर्थोंमें प्रयुक्त हुआ है। एक अर्थ सहारा नामकी अफ्रीकाकी मरुभूमिभी है। स्विटजरलैंड—यूरोपमें सुहावना है। मंकीग्लैंड—डाक्टर वारनाफ़ बंदरोंकी गिलटी मनुष्यके शरीरके भीतर चीरा लगाकर रख देनेसे नया यौवन लाते हैं। यह प्रयोग कुछ अंश तक ही सफल हुआ है।

पृष्ठ ५१

बायरन—अंग्रेजी महाकवि। प्रेम विषयकी बहुत कविताकी हैं। विटेमिन—प्राणशक्ति; जो कहा जाता है हरि वस्तुओंमें बहुत है। पोलसन—मक्खनका बड़ा व्यापारी।

पृष्ठ ५२

मंचूको-चीनका वह प्रांत जो जापानने ले लिया था। पहले इसका नाम मंचूरिया था। ग्रेटा गारबो—सुन्दर और विख्यात

सिनेमा अभिनेत्री। सोयाबीन—सेमके बीजके समान एकदाना जिसके बारेमें पहले बड़ी प्रशंसा थी कि इसके खानेसे बड़ी शक्ति बढ़ती है।

पृष्ठ ५६

पिंगपांग—एक अंग्रेजी खेल जो घरमें खेला जाता है।

पृष्ठ ५७

लायल—भक्त

पृष्ठ ५८

चाहकर—श्लेष

पृष्ठ ५९

सुरा का सार—अलकोहल

पृष्ठ ६२

चरचिल—इगलैंड का प्रधान मंत्री

पृष्ठ ६४

कार्ड पर—राशन के युग में कपड़े कार्ड पर ही मिलते थे। बड़ी कठिनाई से।

पृष्ठ ६६

करफ्यू—जब दंगे होते थे तब करफ्यू की आज्ञा होती थी। कोई घर से बाहर नहीं निकल पाता था। यह अंग्रेजी शासन में बहुत होता था।

पृष्ठ ६८

तिलोचन—काशी की बाजार की विख्यात मंडी।

पृष्ठ ७०

वाइज—उपदेशक जो कहते हैं संसार के आनंद से मुख मोड़ लो।

पृष्ठ ८५

तूल—एक प्रकार का बढ़ियाँ ऊनी कपड़ा।

पृष्ठ ८७

फाइल—सरकारी पत्रों का समूह।
सेण्टर—केन्द्र।
प्लेन—मैदान। हिल—पहाड़।
साहिल—किनारा।

पृष्ठ ८६

ब्लाउज—स्त्रियों का कमीज।
शर्ट—कमीज।

पृष्ठ ६०

कामरेज—कामरेड का स्त्रीलिंग।

पृष्ठ ६२

कटिंग—कतरन।

पृष्ठ ६३

पास-बुक—बैंक में हिसाब की कापी।

पृष्ठ ९५

गाना क्लासिकल—शास्त्रीय संगीत ।

पृष्ठ ९६

वोल्टेज—बिजली की शक्ति ।

लिपिस्टिक—अधरों को रंगने वाली वस्तु ।

पृष्ठ ९७

एकशा, ओल्डटाम—दो प्रकारकी विलायती शराबें ।

पृष्ठ ९८

माटा—एक प्रकारका लाल चींटा ।

पृष्ठ १००

खानए जंबूर—मक्खीका छाता ।

पृष्ठ १०२

टेस्ट—रुचि ।

पृष्ठ १०५

ट्रेमर—कंपन । सिसमोग्राफ़—यह यंत्र जिसमें भूकंप होने पर कंपन होने लगती है ।

नोट—गांठ । यह उस समय सन् १९२४ में लिखा गया था जब पश्चिमोत्तर प्रदेश में मुसलमानों ने कोहाट में हिंदुओं की बस्ती जला दी थी ।

पृष्ठ १०६

तीसरा चौपदा—बनारसी साड़ी का रूपक है।

पृष्ठ १०६

किटसन लम्प—गैस हण्डा।

पृष्ठ १११

काशीका बुढ़वा मंगल मेला बड़ा विख्यात था। उसमें बहुत सी नावें एक साथ बाँध दी जाती थीं और उनकी सतह बराबर कर दी जाती थी और उसी पर नाच गाना होता था। उसी को नवपट्टैया कहते थे।

पृष्ठ ११२

लाट साहब से अर्थ लार्डलिनलिथगो से है जो सांड़ के प्रेमी थे।

पृष्ठ ११६

लिंच—सरकारी मनुसपलटी में बोर्ड के शासक थे। हनुमान फाटक—काशी का वह महल्ला जहाँ मुसलमानों ने दंगे में आग लगायी थी।